सन् 1998 से लगातार प्रकाशित

जहाज मन्दिर

अधिष्ठाता - पूज्य आचार्य श्री जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी म.सा.

▪ वर्ष : 14 ▪ ▪ अंक : 3 ▪ ▪ 5 जून 2017 ▪ ▪ मूल्य : 20 रु. ▪

नँ
राजस्थान की धन्यधरा
बीकानेर नगरे
चातुर्मास हेतु प्रवेश उत्सव

पावन निश्रा

पूज्य गुरुदेव प्रज्ञापुरुष आचार्य भगवंत
श्री जिनकान्तिसागरसूरीश्वरजी म.सा. के शिष्य
पूज्य गुरुदेव गच्छाधिपति आचार्य भगवंत

श्री जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी म.सा. ठाणा ८

पू. मुनि श्री मयंकप्रभसागरजी म., पू. मुनि श्री मनितप्रभसागरजी म., पू. मुनि श्री मेहुलप्रभसागरजी म.,
पू. मुनि श्री समयप्रभसागरजी म., पू. मुनि श्री विश्रुतप्रभसागरजी म.,
पू. मुनि श्री श्रेयांसप्रभसागरजी म., पू. मुनि श्री मलयप्रभसागरजी म.
एवं
पू. मणिनी प्रवरा श्री सुलोचनाश्रीजी म., श्री सुलक्षणाश्रीजी म. सा. की शिष्या
पू. साध्वी श्री प्रियश्रद्धांजनाश्रीजी म.सा.
पू. साध्वी प्रियस्वर्णांजनाश्रीजी म.सा. आदि ठाणा 6

शुभ मुहूर्त्त : आषाढ़ सुदि 10 सोमवार दि. 3 जुलाई 2017 प्रातः 8.30 बजे

सकल श्रीसंघ से पधारने का हार्दिक अनुरोध है।

निवेदक/आयोजक

श्री जैन श्वे. खरतरगच्छ संघ ट्रस्ट, बीकानेर

श्री कृपाचन्द सूरि जैन धर्मशाला एवं भोजनशाला, रांगड़ी चौक, बीकानेर
श्री जिनचन्द्र सूरि जैन दादावाड़ी (रेल दादावाड़ी) फोन : (धर्मशाला) 0151-2523141 (दादावाड़ी) 0151-2271095

संपर्क

पन्नालाल खजांची-75975 62356, शांतिलाल सुराणा-94609 95900
अशोक कुमार पाहल-94689 42099, कंवरलाल सेठिया-99504 77488

।। श्री शांतिनाथाय नमः ।।

।। दादा गुरुभ्यो नमः ।।

पांडवों की तपोभूमि

श्री चौहटन नगरे

भव्य चातुर्मासार्थ प्रवेश उत्सव

सकल श्री संघ को सादर आमंत्रण

प्रवेश शुभ मुहूर्त : आषाढ सुदि 10 सोमवार, दिनांक 3 जुलाई 2017, प्रातः 8.00 बजे

दिव्याशीष

पूज्य गुरुदेव प्रज्ञापुरुष आचार्य श्री जिनकांति सागरसूरीश्वरजी म.सा.

पू. महातपस्वी मुनि श्री प्रतापसागरजी म.सा.

आज्ञाप्रदाता

पू. गच्छाधिपति आचार्य देव श्री जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी म.सा.

पावनकारी निश्रा

पू. ब्रह्मसर तीर्थोद्धारक उपाध्याय प्रवर श्री मनोज्ञसागरजी म.सा.

पावनकारी निश्रा

पूज्य ब्रह्मसर तीर्थोद्धारक उपाध्याय प्रवर **श्री मनोज्ञसागरजी म.सा.**

पू. युवा मुनि श्री नयज्ञसागरजी म.

सकल श्रीसंघ को पधारने का हार्दिक अनुरोध करते हैं।

निवेदक

श्री जैन श्वेताम्बर मूर्तिपूजक श्रीसंघ चौहटन

।। श्री चन्द्रप्रभस्वामि ने नमः ।।

।। दादागुरुदेव श्री जिनदत्त-मणिधारी जिनचन्द्र- जिनकुशल-जिनचन्द्रसूरिभ्यो नमः ।।

।। प.पू. आचार्य श्री जिन कान्तिसागरसूरिभ्यो नमः ।।

चेन्नई महानगर के सूलै बाजार मध्ये

मंगलमय वर्षावास प्रसंगे आत्मीय आमंत्रण

शुभ मुहूर्त : आषाढ सुदि 2 दिनांक 25 जून 2017, रविवार

आज्ञा प्रदाता

परम पूज्य गणनायक सुखसागरजी म.सा. के समुदायवर्ति परम पूज्य युगप्रभावक आचार्य भगवंत श्री जिन कान्तिसागरसूरिजी म.सा. के प्रधान शिष्य रत्न वर्तमान पट्टधर परम पूज्य आचार्य भगवंत **श्री जिन मणिप्रभसूरीश्वरजी म.सा.**

वर्षावास में क्षेमंकारी
पावनकारी निश्रा

परम पूज्य प्रवर्तिनी श्री प्रेमश्रीजी म.सा. की प्रशिष्या
पार्श्वमणि तीर्थ प्रेरिका गणिनी पद विभूषिता प.पू. गुरुवर्या
श्री सुलोचना श्रीजी म.सा. आदि ठाणा 7

प.पू. खरतरगच्छाधिपति आचार्य
श्री जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी म.सा.

पार्श्व तीर्थ प्रेरिका, गच्छ गणिनी
प.पू. गुरुवर्या श्री सुलोचना श्रीजी म.सा.

मंगल कार्यक्रम

सामैया एवं जूलुस दि. 25-6-2017 रविवार, प्रातः 7.30 बजे से साल्ट कोटार्स पेट्रोल पंप से गाजों बाजों के साथ प्रारंभ होकर प्रातः 9.00 बजे सूलै मंदिरजी उपाश्रय में मंगल प्रवेश, प्रवचन आदि कार्यक्रम

चातुर्मास आराधना स्थल

श्री चन्द्रप्रभ जैन श्वे. मंदिर- उपाश्रय
सेठ कालुराम रतनलाल मालु जैन भवन
38, वेंकटाचलम स्ट्रीट, सूलै,
चेन्नई- 112

निवेदक

श्री सूलै जैन संघ
सूलै, चेन्नई- 600 112.
फोन: 044- 2536 2436

सम्पर्क सूत्र: 9840144719, 9903461591

आगम मंजूषा

भगवान महावीर

उवसमेण हणे कोहं माणं मद्दवया जिणे।
मायं च ऽ ज्जवभावेण लोभं संतोसओ जिणे॥

– दशवैकालिक 6/18

उपशम से क्रोध को नष्ट करो, मृदुता से मान को जीतो, सरलता से माया (कपट) को दूर करो और संतोष से लोभ पर विजय प्राप्त करो।

Destroy anger throudh calmness, overcome ego by modesty, discard deceit by straightforwardness and defeat greed by contentment.

अनुक्रमणिका

1. नवप्रभात	आचार्य श्री जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी म.सा.	04
2. गुरुदेव की कहानियां	आचार्य जिनमणिप्रभसूरि	07
3. ऐसे थे मेरे गुरुदेव	आचार्य जिनमणिप्रभसूरि	11
4. महाशतक	मुनि मनितप्रभसागरजी म.सा.	13
5. स्मृति शेष पूजनीया गुरुवर्या श्री के संस्मरण	डॉ. विद्युत्प्रभाश्रीजी म.सा.	15
6. हृदयोद्‌गार	मनीष दुगड़, दुर्ग	17
7. पूज्य गुरुवर्या श्री हेमप्रभाश्रीजी म.सा.	शुद्धांजनाश्रीजी म.सा.	19
8. चातुर्मास लिस्ट	संकलन	21
9. जहाँ माँ का सम्मान नहीं वहाँ देवता..	कैलाश बी. संखलेचा	25
10. मिन्नी/खजांची/भुगडी गोत्र का इतिहास	आचार्य श्री जिनमणिप्रभसूरि	30
11. समाचार दर्शन	संकलन	31
12. जटाशंकर	आचार्य श्री जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी म.सा.	41

गच्छाधिपतिश्री का बीकानेर में वर्षावास प्रवेश 3 जुलाई 2017 को

पूज्य गुरूदेव खरतरगच्छाधिपति आचार्य भगवंत श्री जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी म.सा. का बीकानेर नगर में चातुर्मास प्रवेश आषाढ सुदि 10 सोमवार ता. 3 जुलाई 2017 को प्रातः 8 बजे होगा।
सकल श्री संघ से पधारने का हार्दिक अनुरोध है।

जहाज मन्दिर

मासिक

अधिष्ठाता
खरतरगच्छाधिपति आचार्य भगवंत
श्री मज्जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी म.सा.

वर्ष : 14 अंक : 3 5 जून 2017 मूल्य 20 रू.

प्रधान संपादक :
डॉ. यू.सी. जैन (महामंत्री)

जहाज मन्दिर में प्रकाशित रचनाकारों द्वारा व्यक्त विचारों से सम्पादक / प्रकाशक की सहमति आवश्यक नहीं है

सदस्यता शुल्क

संस्था संरक्षक	:	21,000 रूपये
मानद संरक्षक	:	11,000 रूपये
15 वर्षीय सदस्यता	:	2500 रूपये
12 वर्षीय सदस्यता	:	2000 रूपये
6 वर्षीय सदस्यता	:	1000 रूपये
त्रिवार्षिक सदस्यता	:	500 रूपये
वार्षिक सदस्यता	:	200 रूपये

सदस्यता, विज्ञापन व सहयोग राशि
ICICI की किसी भी शाखा में
SHRI JIN KANTI SAGAR SOORI SMARK TRUST
BANK - ICICI JALORE
ACCOUNT NO. 065301000256
IFSC CODE - ICIC0000653

सम्पर्क सूत्र / प्रकाशक

श्री जिनकांतिसागरसूरि स्मारक ट्रस्ट
जहाज मन्दिर
माण्डवला - 343042, जिला-जालोर (राज.)
फोन : 02973-256107, 256192, 9649640451
E-mail : jahaj_mandir@yahoo.co.in
www.jahajmandir.com
www.jahajmandir.org

विज्ञापन हेतु प्रचार मंत्री
कैलाश बी. संखलेचा, चैन्नई
से संपर्क करावें।
मो. 094447 11097

एक चित्रकार भित्तिचित्र बनाने के लिये उत्सुक हुआ था।

एक दीवार का निर्णय किया।

तूलिका और रंगों के चषक पास में लिये।

अपनी कल्पना में एकाकार होकर तूलिका का प्रयोग प्रारंभ किया।

चित्र पूरा होने को था। तभी एक संत का उधर आगमन हुआ।

संत ने चित्र देखा... उसकी एकाग्रता देखी... कला के सौन्दर्य को देख कर मन प्रसन्न हुआ।

पर... कुछ ही पलों के बाद उसका चेहरा उदास हो गया।

चित्रकार चिंता में पडा। सोचा था उसने कि मेरी कला की महिमा का बखान करेंगे! प्रसन्नता का पुरस्कार देंगे। पर ये अन्यमनस्क क्यों हो गये हैं! कोई त्रुटि है... !

उसके पूछने पर संत ने कहा- चित्र तो बहुत ही बढ़िया बनाया है तूंने! पर यह तो देखना था कि जिस दीवार पर तुम चित्र बना रहे हो, उसकी स्थिति क्या है!

उसका प्लास्टर उखड रहा है। दीवार भी गिरने की तैयारी में है।

चित्र जितना अच्छा चाहिये... उसका आधार भी तो उतना ही मजबूत चाहिये। कच्ची दीवार पर बना चित्र कितना टिकेगा! पूरा होने से पहले ही मृत्यु को प्राप्त करेगा।

ओह! इस उदाहरण ने मेरे मन को झकझोरा है। मैं चित्र बनाता हूँ। बढिया बनाता हूँ। पूरी मेहनत से और एकाग्रता से बनाता हूँ। पूरे प्राण डालता हूँ। पर मैंने कभी इस बात का विचार नहीं किया कि चित्र जिस पर बना रहा हूँ, वह कितना टिकाऊ है!

मैं चित्र बना रहा हूँ यश का... मैं चित्र बना रहा हूँ विस्तार का...! पर इसका आधार मेरा शरीर कितना टिकाऊहै! इसका आधार संसार कितना मजबूत है! इस बात का तो चिंतन किया ही नहीं।

मेहनत विफल हुई। और एक जन्म की नहीं, जन्मों जन्मों की मेरी मेहनत विफल हुई है। क्योंकि हर जन्म में यही करता आया हूँ। चित्र कभी पूरा ही नहीं हो पाया। अधूरे चित्र के साथ मैंने आधार को मरते देखा है।

मुझे सावधान होना है। मजबूत आधार की खोज करनी है जो कि अपने ही पास है। अभिन्न है। उस पर अपनी सारी कल्पनाऐं... सारी क्षमताऐं... उंडेल देनी है।

नवप्रभात

चालीसगांव नगर

में भव्य चातुर्मास प्रवेश पर

सस्नेह हार्दिक अभिनंदन

प. पू. श्री जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी म.सा. की आज्ञानुवर्तिनी

प. पू. महत्तरा पद विभूषिता श्री चम्पाश्रीजी म.सा. की विदुषी शिष्या

खरतरगच्छीय शासन प्रभाविका

प. पु. चम्पाकली, गणिनी पद विभुषिता, मारवाड़ ज्योति

साध्वी श्री सूर्यप्रभाश्रीजी म.सा.

प. पू. साध्वी श्री हर्षप्रज्ञाश्रीजी (मंजू) म.सा.

आदि ठाणा

चातुर्मास भव्य प्रवेश 3 जुलाई 2017, सोमवार

प्रवेश के शुभ अवसर पर समस्त श्रीसंघ पधार कर जिनशासन की शोभा बढ़ावें।

आयोजक

श्री जैन श्वेताम्बर मूर्तिपूजक श्रीसंघ

रथ गली, चालीसगांव-424101 (महा.)

सम्पर्क सूत्र

संजय टाटिया (अध्यक्ष) 9422775121

दिलीप भंसाली (सेक्रेटरी) 9423904742

अतीश कोठारी (उपाध्यक्ष) 9420111633

अवधेश संकलेचा (व्हा. सेक्रेटरी) 9422616661

मुमुक्षु : 8150812082

आज्ञा प्रदाता

प. पू. खरतरगच्छाधिपति आचार्य
श्री जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी म.सा.

दिव्याशीष
प. पू. महत्तरापद विभूषिता
श्री चम्पाश्रीजी म.सा.
प. पू. समता साधिका
श्री जितेन्द्र श्रीजी म.सा.

दिव्याशीष

प. पू. महत्तरापद विभूषिता
श्री चम्पाश्रीजी म.सा.

वर्षावास निश्रा

प. पू. चम्पाकली, गणिनी पद विभूषिता
प. पू. गुरुवर्या श्री सूर्यप्रभाश्रीजी म.सा.

गुरुदेव की कहानियाँ

वाणी का जहर

आचार्य जिनमणिप्रभसूरि

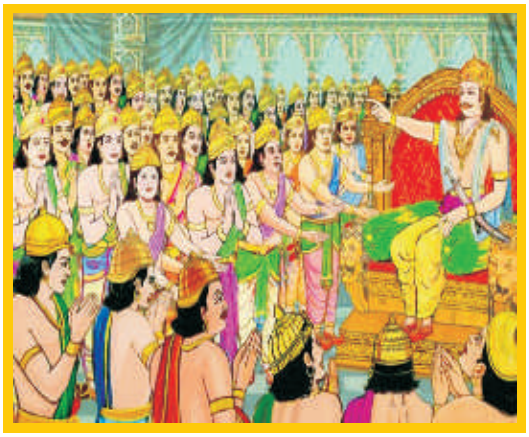

युवराज ने तीसरे व्यक्ति से पूछा, तुम्हारा इसने क्या बिगाड़ा है? उसने कहा- क्या कहूँ? मेरी तो आजीविका का साधन ही इसने नष्ट कर दिया। मेरा एक अच्छा सा घोडा था। आज घूमने के लिए मैं उसे लेकर निकल पड़ा। अचानक राह चलते वह बिदक गया। वह सरपट भागने लगा। मैं उसकी लगाम पकड़ नहीं पाया। तभी इसने लकड़ी फैंककर मेरे घोड़े को मार गिराया।

युवराज ने उसने पूछा- 'क्या यह सत्य है?' नौकर ने कहा-'हाँ राजन! मुझे पकड़कर ला रहे थे, उस समय इन्होंने तेज आवाज में कहा-'अरे! कोई इस घोड़े को पकड़ो। नहीं रूके तो लकड़ी फैंककर भी रोको। तब मैंने अपनी लकड़ी फैंकी। मेरा दुर्भाग्य, वह लकड़ी किसी मर्मस्थल पर लगी और घोड़ा भर-भराकर गिर पड़ा। आप ही बताइये मालिक! इसमें मेरा क्या दोष है?'

युवराज ने तीनों को शान्ति से सुना। विचित्र मामला था। पूरी सभा में सन्नाटा फैल गया। सभी युवराज के फैसले को सुनने के लिए उत्सुक हो गये। पेचीदा मामला था। सुलझाना आसान नहीं था। सामान्य आदमी तो सुनकर ही चौंक जाय। एक अपराधी और तीन अपराध! युवराज ने गौर से अपराधी युवक को देखा।

उसके चेहरे पर मासूमियत और निर्दोष भाव युवराज को आकर्षित करने लगे। एक ओर न्याय, दूसरी ओर लगाव! अगर पक्ष में फैसला दे तो प्रजा के साथ अन्याय। अगर फैसला अपराधी के विरोध में दे तो आत्मा पर बोझ। कुछ क्षण राजकुमार ने सोचा और तुरन्त फैसला सोच लिया।

उसने बैलों के मालिक से कहा-'अपराधी को दण्ड अवश्य मिलेगा पर उससे पहले कुछ बात तुम्हें भी माननी होगी। तुम ऐसा करो- हमारी पशुशाला से उत्तमोत्तम बैलों की जोड़ी ले लो, बदले में अपनी दोनों आँखे निकलवा दो। क्योंकि तुम्हारे लिए आँखों की कोई आवश्यकता नहीं है। तुमने अपनी आँखों से बैलों को बाँधते देखा पर फिर भी तुम इसे ही चोर समझ रहे हो। राम को तो कोई भी चुराकर ले जा सकता है। यह तुम्हारा अपराधी इसलिए हो रहा है न, कि इसने संकेत से ही बैल बाँधते दिखा दिया- बोला कुछ नहीं। तुम अपनी अनावशक आँखों को अपने से अलग कर दो।'

मालिक तो बिचारा इस विचित्र फैसले को सुनकर हक्का-बक्का हो गया। उसने तो अनेक मंसूबे बाँध रखे थे कि राजा इसे दण्डित तो करेगा ही पर हर्जाने के रूप में मुझे भी बहुत कुछ मिलेगा। पर हो गया विपरीत। उसने गिड़गिड़ाते कहा- 'नहीं हजूर! इस बार माफ कर दीजिए। मेरे बैल तो गये पर आँखों के अभाव में तो जीवन शून्य ही हो जायेगा।'

सभा में तालियों की गड़गड़ाहट गूंज उठी। सारी सभा मुक्त हास्य कर उठी।

श्री वर्धमान स्वामिने नमः श्री स्तंभन पार्श्वनाथाय नमः श्री कुंथुनाथाय नमः

श्री अनंत लब्धिनिधान श्री गौतमस्वामिने नमः

खरतर बिरूदधारक श्री जिनेश्वर सूरिभ्यो नमः

पू. दादा गुरु श्री जिनदत्त-मणिधारी-जिनचंद्र-जिनकुशल-जिनचंद्र सद्गुरुभ्यो नमः

पू. गणनायक श्री सुखसागर सद्गुरुभ्यो नमः

श्री समदड़ी नगर की धर्म धरा पर

चम्पा-जितेन्द्र ज्योति

प.पू. धवल यशस्वी श्री विमलप्रभा श्री जी म.सा.

प. पू. साध्वी श्री हेमरत्ना श्रीजी म.सा. आदि ठाणा के

भव्य वर्षावास प्रवेशोत्सवे

प्रवेश दिन : आषाढ़ शुक्ला 12, बुधवार, ता. 5.7.2017, प्रातः 8.15 बजे

आज्ञा प्रदाता
प. पू. खरतरगच्छाधिपति आ. भ.
श्री जिनमणिप्रभ
सूरीश्वरजी म.सा.

दिव्याशीष
प. पू. महत्तरापद विभूषिता
श्री चम्पाश्रीजी म.सा.
प. पू. समता साधिका
श्री जितेन्द्र श्रीजी म.सा.

सस्नेह हार्दिक आमंत्रण

आपको निवेदन करते हुए हमारे हृदय में परम हर्षोल्लास की लहरें हिल्लोर ले रही है। इस वर्ष हमारे संघ की आग्रह भरी विनंती को स्वीकार कर प.पू. गच्छाधिपति आचार्य श्री जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी म.सा. ने प.पू. महत्तरापद विभूषिता श्री चम्पाश्रीजी म.सा., प.पू. समता साधिका श्री जितेन्द्र श्रीजी म.सा. की विदुषी शिष्या प.पू. धवल यशस्वी श्री विमलप्रभा श्रीजी म.सा., प.पू. साध्वी श्री हेमरत्ना श्रीजी म.सा. आदि ठाणा को चातुर्मासार्थ भेजने की कृपा की है, अतः हम सदैव गुरुदेव श्री के ऋणी रहेंगे। चातुर्मास दरम्यान प्रतिदिन प्रवचन, स्वाध्याय संस्कार शिविर व विविध प्रतियोगिताएं आदि धार्मिक अनुष्ठान होंगे।

आप सभी चातुर्मास प्रवेश व चातुर्मास में पधारकर जिनशासन की शोभा बढ़ाये व संघ को लाभान्वित करे।

विनित
श्री जैन श्वेताम्बर मुर्ति पूजक संघ
समदड़ी

संपर्क सूत्र
मांगीलाल चौपड़ा - 99720 87672
नेमीचन्द भंसाली - 94145 30770
राणमल धानेशा- 99861 27996
हुकमीचन्द चौपड़ा- 99820 86689

चातुर्मास स्थल
महावीर उपाश्रय
नया बास,
समदड़ी

घोड़े वाले से कहा, 'अच्छा ऐसा करो हमारी अश्वशाला से उत्तम नस्ल का एक घोड़ा ले लो और एवज में अपनी जुबान बाहर निकाल दो क्योंकि इसके होते कितने व्यक्तियों का अशुभ हो जायेगा?एक ओर तो तुम स्वयं कह रहे हो कि घोड़े को लकड़ी मारकर भी रोको पर रोको जरूर। दूसरी ओर लकड़ी मारने पर अपराधी करार देते हो। यह कैसी जुबान?

तुमने स्वयं ने लकड़ी मारने का कहा। इसने मारी। इसमें इसकी क्या त्रुटि हुई?भूल तुमने अपनी जुबान खोलकर की है। अत: पहले सजा तुम्हें होगी।'

युवराज के इस अनोखे फैसले को सुनकर उसके तो होश ही फाख्ता हो गये। बात सत्य थी। वह इसमें इनकार भी तो नहीं कर सकता था। अगर जुबान ही कट जाय तो जीवन ही कहाँ अवशिष्ट बचने वाला था।

अब नम्बर था वृद्ध के बेटे का। वह तो बिचारा कुछ सुने बिना ही कांपने लगा। जरूर मुझे भी इसी प्रकार की सजा मिलेगी ही। बात भी सत्य है। कोई गिरने से तो मरता नहीं। मेरे बापू तो वृद्ध थे ही। इसने भी कोई जानकर तो मारा नहीं। यह तो स्वयं मरने का प्रयास कर रहा था। यह क्यों किसी को मारता?

जिसे अपराधी बनाया था, उसके चेहरे पर मुस्कान व तृप्ति का भाव छा गया। उसे विश्वास हो गया कि उसके साथ अन्याय नहीं होगा।

वृद्धपुत्र से युवराज ने कहा- इसके गिरने से तुम्हारे पिता की मृत्यु हुई। तुम उसका बदला इस प्रकार लो। यह सो जाता है और तुम फाँसी लगाकर इस पर गिर पड़ो। बस, तुम्हारा बदला पूर्ण हो जायेगा। तुम्हें इस बात का मलाल नहीं रहेगा कि मैंने मेरे बाप के हत्यारे को छोड़ दिया।

सभा प्रसन्न थी कि राजकुमार बड़ी सूझबूझ से काम ले रहे हैं। गहरे चिंतनशील है। अन्यथा इतने युक्तियुक्त फैसले तो दिग्गज भी नहीं दे सकते। वास्तव में इनकी योग्यता पद के अनुरूप ही है। ऐसा योग्य प्रशासक पाकर आनन्दमग्न हो गये।

उस युवक के तो पांवों तले धरती ही खिसक गयी। इसको चोट आयेगी या नहीं पर स्वयं के प्राणों का विसर्जन तो पहले करना था।

उन तीनों ने युवराजकुमार से जीवनदान की प्रार्थना की और क्षमायाचना करने लगे। युवराज को उनसे द्वेष तो था नहीं। वह तो उस नौकर को भी बचाना चाहता था और तीनों को सन्तुष्ट भी करना चाहता था। उसका उद्देश्य सफल हो गया।

उसने सभी हो विदा किया। यथासमय सभा विसर्जित हो गई। चारों ओर युवराज की प्रशस्तियाँ गाई जाने लगीं।

नौकर से लगाव जुड़ने के कारण कुमार ने उसे अपना अंगरक्षक बना लिया। जीवन की सारी सुविधा सहज ही उपलब्ध हो गयी।

एक बार एक ज्ञानी मुनिराज के चरणों में जाकर नौकर ने अपनी जिज्ञासा रखी-तीन-तीन अपराध सिर पर होने के बावजूद राजकुमार ने मुझे क्यों बचाया?मुझे सारी सुख सामग्री क्यों दी?

महात्मा ने कहा-भद्र! सभी प्राणी पूर्व संस्कारों और पुण्य पापों से बँधे होते हैं। तुम पूर्वजन्म में घी के व्यापारी थे। एक बार घी खरीदने आयी बुढ़िया ने सिर खुजलाते बालों में से 'जूं' निकाली। बुढ़िया उस 'जूं' पर क्रोधित हो गयी। वह 'जूं' को मारना ही चाहती थी कि तुमने कहा-इस जूं को मत मारो पर बुढ़िया तो आक्रोश से भरी हुई थी। उसने कहा-क्यों नहीं मारूँ?इसने मेरा कितना खून पिया है?

तब तुमने दया प्रेरित हो कहा- मैं तुम्हें घी का घड़ा दूंगा तुम इसे मुझे दे दो।

घी के लालच में बुढ़िया ने जूं दे दी। तुमने उस जूं की घी देकर प्राण रक्षा की। वही जूं अनेक जन्मान्तर पश्चात इस जन्म में युवराज के रूप में उत्पन्न हुआ है। तुम ही पूर्वजन्म में घी के व्यापारी थे। तुमने इसकी प्राण रक्षा की थी अत: इस जन्म में उसने तुम्हें सुरक्षा के साथ विशेष प्रेम भी दिया। महात्मा के होठों से संगीत गूंज उठा- 'बदला भले-बुरे का, यहाँ का यहाँ ही मिलता।' (क्रमश:)

।। श्री नमिनाथाय नमः ।।

महाराष्ट्र खानदेश देशान्तर्गत

श्री खापर नगरे

भव्य चातुर्मासार्थ प्रवेश समारोह पर

सकल श्री संघ को सादर आमंत्रण

प्रवेश शुभ मुहूर्त : आषाढ सुदि 9 रविवार, दिनांक 2 जुलाई 2017, प्रात: 8.00 बजे

आज्ञाप्रदाता

पू. गच्छाधिपति आचार्य
देव श्री जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी
म.सा.

कृपा दृष्टि

पू. महत्तरा पद विभूषित
गुरुवर्या श्री दिव्यप्रभा श्रीजी
म.सा.

प्रत्यक्ष निश्रा

पू. साध्वी
श्री विरागज्योति श्रीजी

पू. साध्वी
श्री विश्वज्योति श्रीजी

प. पू. खरतरगच्छाधिपति आचार्य भगवन्त श्री जिनमणिप्रभसूरिश्वरजी म.सा.
की आज्ञानुवर्ति प. पू. महत्तरा पद विभूषिता गुरुवर्या श्री दिव्यप्रभाश्रीजी म.सा. की सुशिष्या
पू. श्री साध्वी श्री विरागज्योतिश्रीजी म.सा., पू. साध्वी श्री विश्वज्योतिश्रीजी म.सा., पू. साध्वी श्री जिनज्योतिश्रीजी म. आदि

सकल श्रीसंघ को पधारने का हार्दिक अनुरोध करते हैं।

निवेदक

श्री जैन सकल श्रीसंघ खापर

श्री जिनदत्त सूरि दादावाड़ी

पो. खापर-425419, तहसील अक्कलकुंआ जिला नन्दुरबार (महा.)

संपर्क सूत्र

अरविन्द चैनसुखजी बोथरा - 09423755000, अनोपचंद आसकरणजी पारख - 09423496615
जवेरीलाल जसराजजी कोटड़िया - 09422784831, सुरेशचंद सोनराजजी बोथरा - 09421466914
सुरेशचंद गुलाबचंदजी गुलेच्छा - 09421528800, किशोर गुलाबचंदजी चोरड़ीया - 09423496821
भवंरलाल गुलाबचंदजी कोचर-09423496813

54
संस्मरण

ऐसे थे मेरे गुरुदेव

आचार्य जिनमणिप्रभसूरि

मुंबई में पूज्य गुरुदेव श्री का प्रवास चल रहा था। आगामी चातुर्मास मुंबई या मुंबई के आसपास होने की संभावना थी। इसलिये नगर भ्रमण के लिये पर्याप्त समय आपश्री के पास था।

उन दिनों पूरे भारत में जैन एकता और सामाजिक विकास की चारों ओर हल चल थी। जैन समाज की एकता हेतु कई संस्थाओं का गठन हुआ था।

श्वेताम्बर समाज की एकता के संदर्भ में जैन श्वेताम्बर कोन्फरन्स का गठन हुआ था। यह संस्था काफी समय से समाज के उत्थान व विकास हेतु कार्यरत थी। इस वर्ष उसका 17वां अधिवेशन होने जा रहा था। यह अधिवेशन मुंबई में होने जा रहा था। इस अधिवेशन में सकल संघ को सम्मिलित करने के लिये पूरे शहर में जागरण का एक अभियान चलाया जा रहा था।

इस हेतु एक विशाल सभा का आयोजन पूज्य मोहनलालजी म. के समुदाय के खरतरगच्छीय पूज्य गुलाबमुनिजी म. की अध्यक्षता में दादर जैन सिद्धचक्र मंडल द्वारा श्री शांतिनाथ जैन मंदिर में 13 जनवरी शुक्रवार को आयोजित की गई थी। जिसमें पूज्य गुलाबमुनिजी म. एवं पूज्य न्याय व्याकरण शास्त्री श्री दर्शनसागरजी म. के प्रभावक प्रवचन हुए थे।

रविवार 15 जनवरी 1950 को विशेष सभा का आयोजन कोट के शांतिनाथ जैन मंदिर उपाश्रय में पूज्य गुरुदेवश्री की निश्रा में किया गया था।

पूज्यश्री ने इस सभा में नारी जागरण के विषय में विशेष प्रवचन दिया था। उन्होंने फरमाया था कि इस अधिवेशन में महिलाओं की भी पूर्ण रूपेण भागीदारी हो नी चाहिये। उन्हें भी विचारों की अभिव्यक्ति का पूर्ण अवसर दिया जाना चाहिये। पूज्यश्री ने कहा- नारी नरक की खान नहीं, अपितु नारी नररत्नों की खान है।

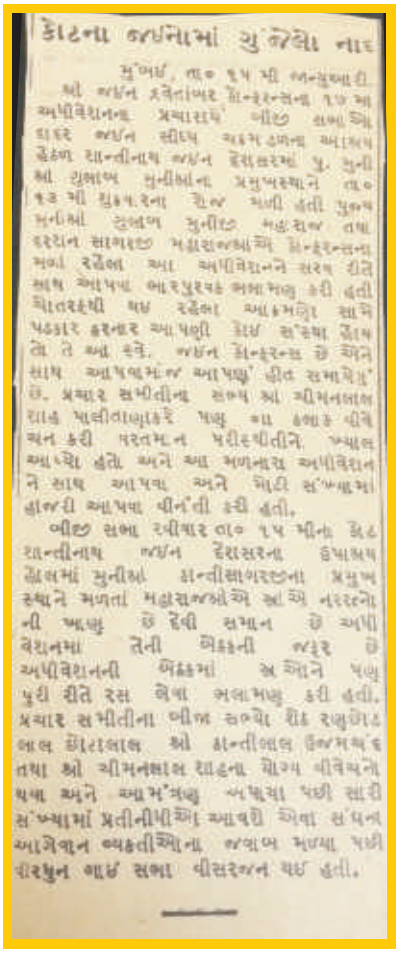

यह पूज्य श्री के प्रवचन का ही प्रभाव था कि अधिवेशन में महिलाओं को भी विचारों को प्रकट करने का अवसर प्राप्त हुआ था।

श्री वर्धमान स्वामिने नमः श्री स्तंभन पार्श्वनाथाय नमः श्री शांतिनाथाय नमः

श्री अनंत लब्धिनिधान श्री गौतमस्वामिने नमः

खरतर बिरूदधारक श्री जिनेश्वर सूरिभ्यो नमः

पू. दादा गुरु श्री जिनदत्त-मणिधारी-जिनचंद्र-जिनकुशल-जिनचंद्र सद्गुरूभ्यो नमः

पू. गणनायक श्री सुखसागर सद्गुरुभ्यो नमः

श्री पाली नगर की धर्म धरा पर

चम्पा-जितेन्द्र ज्योति प.पू. धवल यशस्वी श्री विमलप्रभा श्री जी म.सा. की चरणाश्रिता

प. पू. साध्वीवर्या श्री विश्वरत्ना श्रीजी म.सा. आदि ठाणा 4

भव्य चातुर्मास प्रवेश प्रसंगे हार्दिक

आमंत्रण

प्रवेश दिन : आषाढ़ शुक्ला 7, शुक्रवार, ता. 30.6.2017, प्रातः 8.15 बजे

आज्ञा प्रदाता
प. पू. खरतरगच्छाधिपति आ. भ.
श्री जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी म.सा.

दिव्याशीष
प. पू. महत्तरापद विभूषिता
श्री चम्पाश्रीजी म.सा.
प. पू. समता साधिका
श्री जितेन्द्र श्रीजी म.सा.

कृपा दृष्टि
प. पू. धवलयशस्वी गुरुवर्या
श्री विमलप्रभा
श्रीजी म.सा.

आपको सूचित करते हुए अत्यंत हर्ष हो रहा है कि इस वर्ष हमारे संघ की आग्रह भरी विंनती को स्वीकार प.पू. गच्छाधिपतिआ.भ. श्री जिन मणिप्रभसूरिश्वर जी म.सा. ने प.पू. साध्वी श्री विमलप्रभा श्री जी म.सा. की शिष्याएं प.पू. साध्वी श्री विश्वरत्ना श्री जी म.सा. , प.पू. साध्वी श्री मयूरप्रिया श्री जी म.सा., प.पू. साध्वी श्री चारित्र प्रिया श्री जी म.सा.,प.पू. साध्वी श्री संयमलता श्री जी म.सा. को चातुर्मासार्थ भेजने की स्वीकृति प्रदान की है।

अतः आप सभी प्रवेश व चातुर्मास में पधारकर संघ को लाभान्वित करे।

विनित

श्री जैन श्वेताम्बर खरतरगच्छ संघ

लोढ़ों का वास, पाली मारवाड़ (राज.)

संपर्क सूत्र : पारसमलजी धारीवाल- 9414123203
कांतिलाल बलाई - 9414131234

दस महाश्रावकों की प्रेरक-जीवन-गाथा

महाशतक

मुनि मनितप्रभसागरजी म.सा.

राजगृही की शोभा जैसे स्वर्ग-लोक के मुँह पर भी ताला डाल रही थी। मगधाधिपति सम्राट् श्रेणिक के प्रशासन में प्रजा में पूर्णानन्द का प्रकाश छाया हुआ था।

श्रेणिक सम्राट् का पुण्ययोग इतना प्रबल था कि भोगोपभोग की पंकिल नदियों में गोते लगाते-लगाते साम्राज्ञी चेलना की प्रेरणा से भाव जगा, प्रभु-दर्शन से जीवन में सम्यग्दर्शन का सूर्योदय हुआ और मिथ्यामत-तिमिर नष्ट कर दर्शनी श्रावक की दिव्य गरिमा से खिल उठे।

नरपति की महिमा महान् थी तो उसी नगरी में रहने वाला श्रेष्ठि महाशतक भी कोई सामान्य समृद्धि का धारक नहीं था। इक्कीस करोड़ स्वर्ण मुद्राओं और आठ गोकुलों का अधिपति महाशतक, जिनके सामने देवांगनाएँ भी शर्म से पानी-पानी हो जाये, ऐसी रेवती इत्यादि तेरह सुंदरियों का स्वामी था।

ये तेरह सुन्दरियाँ अपने पितृगृह से दहेज में भारी ऋद्धि लेकर आयी थी। अकेली रेवती आठ कोटि स्वर्ण मुद्राएँ तथा आठ गोकुल लेकर आयी थी, अतः वह अग्र-स्थान को शोभित करती थी। शेष बारह सुन्दरियाँ करोड़-करोड़ स्वर्णमुद्राएँ तथा एक-एक गोकुल दहेज में लेकर आयी थी।

विविध दिशाओं से बही धन-सरिता से महाशतक तो जैसे अखूट लक्ष्मी का महा सागर बन गया था।

एक दिन राजगृही की पुण्यधरा का भाग्य चमका। चरम तीर्थपति महावीर के पावन पगले क्या हुए, पूरी नगरी जैसे बावरी हो उठी। सम्राट् श्रेणिक सम्पूर्ण ऋद्धि के साथ चले समवसरण की ओर। उस अनुपम ऋद्धि को देखा तो महाशतक भी सुसज्ज हो उनके साथ हो गया।

सम्राट् की भोगऋद्धि के दर्शन से उसकी आँखें आश्चर्य और आनंद से भर गयी परन्तु जब वीतराग महावीर की योगऋद्धि देखी तो उसके नयन ही नहीं, रोम-रोम अद्भुत रोमांच से नाच उठा।

हजारों श्रमण-श्रमणी...विनयावनत देवेन्द्र...करबद्ध देव-देवियों की लम्बी कतारें...। ऐसा अनूठा नजारा उसने तो पहली बार ही निहारा था।

सच ही है, व्यक्ति जब तक भोग के कूप में रहता है, तब तक उसे संसार की सारी खुशियाँ उसी में प्रतीत होती है परन्तु जब वह आत्म-योग-साम्राज्य में प्रवेश करता है, तब उस दिव्य मेरू के सम्मुख भौतिक सुख राई से भी तुच्छ लगने लगता है।

ऐसा ही कुछ घटित हुआ महाशतक की अन्तरात्मा में।

न पहले कभी वह समवसरण में गया था।

न पहले कभी प्रभु के दर्शन का लाभ लिया था।

परन्तु आज ऐसा लग रहा था, जैसे जन्मों-जन्मों का रिश्ता है मेरा इस दरबार से...। वह खुद भी नहीं समझ पा रहा था कि क्यों मेरे नयनों में श्रद्धा के अश्रु छलक उठे हैं। वह तो एकटक अस्खलित प्रभु की निर्दोष सौन्दर्यश्री को निहार रहा था।

धर्म सुश्रुषा के उपरान्त कृतज्ञता से गद्गद् हो महाशतक ने कहा-भगवन्! आज ऐसा लग रहा है, जैसे अंधे को दो आँखें मिली। प्यासे को प्याऊ और भूखे को षट्रस भोजन मिला।

आपकी देशना के दर्पण में देख रहा हूँ कि आत्मा का हित संयम में ही है। इस दुनिया में लेने जैसा कुछ है तो पारमेश्वरी प्रव्रज्या और पाने जैसा कुछ है तो सिद्धि-निधि। परन्तु इस कंटकाकीर्ण मार्ग पर चलना मेरे जैसे कायर के लिये कठिन है क्योंकि श्रमण को हजारों गुण धारण करने होते हैं। आप कृपा करके मुझे श्रावक-धर्म प्रदान कीजिए।

महावैभवशाली महाशतक का आत्मनिवेदन का सुनकर बारह पर्षदा आश्चर्य से भाव विभोर हो उठी।

वे जिनशासन में दीक्षित होकर आये तब रेवती के अतिरिक्त बारह पत्नियों ने बारह व्रत धारण की खूब-खूब अनुमोदना करके प्रसन्नता अभिव्यक्त की। कुछ भी नहीं कह पाने में असमर्थ होने से रेवती मन ही मन उनकी साधना देखकर कुढने-चिढने लगी। (क्रमशः)

श्री तिरपातुर नगरे

भव्य चातुर्मासार्थ प्रवेश प्रसंगे हार्दिक

आमंत्रण

प. पू. खरतरगच्छाधिपति आचार्य भगवन्त श्री जिनमणिप्रभसूरिश्वरजी म.सा.
की आज्ञानुवर्ति प. पू. आत्मसाधिका अनुभव श्रीजी म.सा. की सुशिष्या
पू. प्रखर गुरुवर्या श्री हेमप्रभाश्रीजी म.सा. की सुशिष्यायें

प. पू. प्रियम्वदा श्रीजी म.सा., सध्वी श्री शुद्धांजना श्रीजी म.सा.

आदि ठाणा 6

शुभ मंगल प्रवेश :
बुधवार, 5 जुलाई 2017

गुप्त परिवार द्वारा प्रथम चातुर्मास
में आप सादर पधारकर
श्री संघ की शोभा बढ़ावें।

विनित

श्री जैन संघ, तिरपातुर

स्मृति शेष

पूजनीया गुरुवर्याश्री के संस्मरण

बहिन म. सा. डॉ. विद्युत्प्रभाश्रीजी म.सा.

मेरा शयन गुरुवर्या श्री के निकट ही होता था। जब से मैं गुरुवर्या श्री की सेवा में फलोदी पहुँची थी, मेरे प्रति वात्सल्य का अगाध समंदर मैंने महसूस किया था। उनके रोम-रोम से बहते वात्सल्य के झरणे में मैंने अपने आपको आकंठ डूबा हुआ पाया था। आज जो भी मेरी उपलब्धि है वह नि:संदेह उसी वात्सल्य का परिणाम है। क्योंकि यह सत्य है कि मेरी उपलब्धि में न मेरा ज्ञान है और न मेरा पुरूषार्थ।

रात्रि में अचानक मेरी नींद खुली। मैंने देखा- संथारे में कुछ गीलापन महसूस हो रहा है। उस समय धर्मशाला में सर्वथा अंधकार का साम्राज्य होता था। अत्यंत अनिवार्यता की स्थिति में अत्यंत कम प्रकाश करके कंदील रखी जाती थी। मैंने गीलापन का कारण ढूंढने के लिए सेवारत प.पू. प्रकाश श्री जी म.सा. एवं माताजी म. को जगाया। उन्होंने अनुमान लगाया- शायद मात्रा अंदर आ गया होगा, पर कपड़े एकदम सूखे थे।

फिर यह गीलापन कहाँ से आया है?अचानक पाट के नीचे नजर गयी तो देखा वहाँ रसी का जैसे कुंड भरा हुआ था। अरे इतनी सारी रसी कहाँ से आयी है। सभी की आँखों में भय की परछाई तैर गयी। पता लगा कि बुंद-बुंद गुरुवर्या श्री के शरीर से बहकर ही यह एकत्र हुई है पर शरीर के किस हिस्से से इतनी रसी निकली है। सावधानी से देखने पर पता चला गुरुवर्या श्री के घुटने के ऊपर से यह सारा पदार्थ बाहर आया है।

मैं आज भी उस दृश्य का स्मरण कर सिहर उठती हूँ। एक छोटा सा फोड़ा हो जाय तो पूरे शरीर में हलचल हो जाती है और गुरुवर्या श्री के शरीर में इतनी मात्रा में रसी रही उसका कितना दर्द रहा होगा?

लगभग चार माह तक वह पीड़ा रही। पर उस पीड़ा में मैंने उनकी जिस समता के दर्शन किये, वह आज 4 दशक बाद मेरे स्मृति भंडार की अनमोल अमानत है।

प्रत्येक साधक संन्यास जीवन इसीलिये स्वीकार करता है कि उसकी चेतना और चेतना से चिपके अनादिकाल के रागद्वैष के संस्कार मिट सके। उसका आमूलचूल रूपांतरण हो। कषायों का शोधन हो वह जहाँ हैं वहाँ अटके नहीं बल्कि आगे बढ़े।

श्री उदयपुर नगरे

श्री जिनदत्त सूरि दादावाडी मध्ये

भव्यातिभव्य चातुर्मास प्रवेश समारोह

आज्ञाप्रदाता

पू. गच्छाधिपति आचार्य देव श्री जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी म.सा.

दिव्य दृष्टि

पू. प्रवर्त्तिनी आगमज्योति श्री प्रमोदश्रीजी म.सा.

शुभ आशीष

पूजनीया माताजी म. श्री रतनमालाश्रीजी म.सा.

पूजनीया बहिन म. डॉ. श्री विद्युत्पप्रभाश्रीजी म.सा.

पावन निश्रा

पावन निश्रा

पूजनीया बहिन म.

डॉ. श्री विद्युत्प्रभाश्रीजी म.सा. की शिष्या

पू. डॉ. साध्वी श्री नीलांजनाश्रीजी म.सा.

ठाणा 3

प्रवेश शुभ मुहूर्त :
आषाढ सुदि 11 मंगलवार, दिनांक 4 जुलाई 2017,
प्रात: 8.00 बजे

सकल श्रीसंघ को पधारने का हार्दिक अनुरोध करते हैं।

चातुर्मास स्थल

श्री जिनदत्त सूरि दादावाड़ी

मेवाड़ मोटर्स लिंक रोड़, उदयपुर - 313001 (राज.)

निवेदक

श्री जैन श्वे. वासु पूज्यजी महाराज का मन्दिर ट्रस्ट, उदयपुर

संपर्क : 0294-2421047

दो तत्व है एक आवरण एवं दूसरा रूपांतरण। आवरण तो व्यक्ति जब चाहे डाल सकता है। आवरण बाह्य क्रिया है, उसमे मात्र प्रपंच है। आवरण का अर्थ है- व्यक्ति जैसा है वैसा न दिखकर उससे अलग प्रकार का दिखना।

उस वेदना में महसूस हुआ कि मेरी गुरुवर्या श्री ने अपने मन का, चित्त का एवं स्वभाव का कितना गहरा रूपांतरण किया है। अगर रूपांतरण नहीं होता तो इतनी सख्त वेदना में ऐसी निर्दोष समाधि एवं शांति आ ही नहीं सकती थी। यह रूपांतरण भी ऐसा नहीं था जैसा बर्फ का होता है। पानी को एक सीमा तक शीत वातावरण में रखो, बर्फ बन जायेगा पर सामान्य तापमान में आते ही तुरंत पुनः अपने मूल स्वरूप को प्राप्त कर लेता है। इसे भौतिक परिवर्तन कहा जाता है।

दूसरा परिवर्तन रासायनिक परिवर्तन है। इसमें एकबार परिवर्तन हो गया तो मूलरूप में पुनः आना असंभव है। जैसे दूध का एक बार दही बन गया तो उसे पुनः दूध नहीं बनाया जा सकता।

गुरुवर्या श्री का शरीर के प्रति 'मेरे' मन की भावना में रासायनिक परिवर्तन था। उन्होंने वीरवाणी को सुना था, प्रवचनों द्वारा प्रकट किया था, इतना ही नहीं, वक्त पर उसे अपने आचरण में अभिव्यक्त भी किया था। गुरुवर्या श्री की यह वेदना काफी लम्बी चली थी। चीरा लगने के बाद पूरी तरह घाव मिलने में चार माह का समय लगा था। जब उनकी ड्रेसिंग होती थी, कभी भी उस समय आ...ओ.... सुनने को नहीं मिलता था।

उसके बाद लगभग आठ साल का और जीवन गुरुवर्या श्री ने जीया पर उन आठ सालों में भी गुरुवर्या श्री बाह्य प्रवृत्ति से निरंतर उदासीन होते गये और भीतर स्वरमणता का विकास करते रहे।

संयोग से बाद में हम बाड़मेर आ गये। वहीं 8 जनवरी 1983 को परमात्मा पार्श्वनाथ की जन्म कल्याणक तिथि पोष दशमी को उनका समाधिपूर्व स्वर्गवास हो गया।

उनकी जन्म तिथि ज्ञानपंचमी और उनकी महाप्रयाण तिथि पोष दशमी दोनों ही तिथियां जिनशासन की विशिष्ट तिथियां है। ये तिथि प्राप्त होना ही उनके जीवन की महानता को इंगित करती है। उनके स्वर्गवास की प्रथम वर्षगांठ आने से पूर्व ही उनकी स्मृति में कल्याणपुरा बाड़मेर में मंदिर के पास ही दादावाड़ी का निर्माण करवाया गया एवं उसकी प्रतिष्ठा करवायी परंतु मन इस लघुकाय निर्माण से तृप्त नहीं था। गुरुवर्या श्री के विरल विशिष्ट एवं ज्ञानप्रधान व्यक्तित्व को देखते हुए बाड़मेर क्षेत्र के समीप ही विशाल भूखंड खरीदकर कुशल वाटिका का निर्माण करवाया गया।

आज कुशल वाटिका संपूर्ण भारत में विशिष्ट उपक्रम के रूप में स्थापित हो चुकी है।

मैं गुरुवर्या श्री के पावन चरणों में वंदनाएं समर्पित करते हुए निवेदन करती हूँ कि वे जहाँ भी विराजमान हो अपनी अमृत निगाहों से हमें निहारते रहे।

हृदयोद्गार

मनीष दुगड़, दुर्ग

भारतीय नारी जब कमला बनी है तो,
दुनिया को नीलांजना नाम मिल पाता है।
माता कमला शौर्य संस्कार के जगाती है तो,
मनितप्रभ संघ स्वाभिमान मिल पाता है।
रोहिणी देवी संस्कारती है विमला को तो,
दुनिया को विद्युत्प्रभा नाम मिल पाता है।
रतनमाला माता तपती है तपस्या में जब भी तो,
पूजने को मणिप्रभ नाम मिल पाता है।।1।।

छत्तीस गुणों से शोभते, आचार्य श्री को वंदना
वंदना से हो जाती है, पापों की कर्म निकंदना
इच्छामि के पाठ से, इच्छकार के उच्चार से
अब्भुट्ठिओमि के भावार्थ से गुरुदेव के चरणों में वंदना

श्री भायंदर नगरे

वर्षावास मंगल प्रवेश पर हार्दिक आमन्त्रण

आज्ञा प्रदाता

प.पू. खरतरगच्छाधिपति आचार्य
श्री जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी म.सा.

दिव्याशीष
प. पू. महत्तरापद विभूषिता
श्री चम्पाश्रीजी म.सा.
प. पू. समता साधिका
श्री जितेन्द्र श्रीजी म.सा.

प. पू. खरतरगच्छाधिपति मरुधर मणि आचार्य भगवंत
श्री जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी म.सा. की आज्ञानुवर्तिनी
प. पू. महत्तरा पद विभूषिता चंपाश्रीजी म.सा. की विदुषी शिष्या
प. पू. गच्छगणिनी पद विभूषिता मारवाड़ ज्योति श्री सूर्यप्रभाश्रीजी म.सा.
प. पू. स्नेह सुरभि श्री पूर्णप्रभाश्रीजी (भागु) म.सा. की चरणाश्रिता
शासन प्रभाविका प. पू. साध्वी श्री अमितगुणाश्रीजी म.सा. आदि ठाणा 3

कृपा दृष्टि

प.पू. चम्पाकली, गणिनी पद
विभुषिता प.पू. गुरुवर्या
श्री सूर्यप्रभा श्रीजी म.सा.

चातुर्मास भव्य प्रवेश

30 जून 2017, शुक्रवार

वर्षावास निश्रा

प.पू.साध्वी
श्री अमितगुणाश्रीजी म.सा.

प्रवेश के शुभ अवसर पर समस्त श्रीसंघ पधार
कर जिनशासन की शोभा बढ़ावें ।

निमंत्रक

श्री जैन श्वेताम्बर खरतरगच्छ संघ
पो. भायंदर, जिला ठाणे (महा.)

सम्पर्कसूत्र :

विशनराज मेहता : 9820166082, मांगीलाल मालू : 9324347590, पारसमल संकलेचा : 9321540544
अशोक भुरा : 809755449, नरेन्द्र कोचर : 9322806747, नरपतराज मडोवरा : 9323208422
उत्तमचंद गोलेच्छा : 9869500672, अशोक भंसाली : 9820619379, दिलीप कटारीया : 9322671486

10 वें स्मृति दिवस पर विशेष

पू. गुरुवर्या श्री हेमप्रभाश्रीजी म.सा.

हेमचरणरज साध्वी शुद्धांजनाश्री

कोई रोक न पाया, विधाता की मनमानी को,
कौन जानता था कुदरत की,
अनहोनी क्रुर कहानी को,
लगता नहीं है आप चले गये है,
यहाँ से दूर कहीं
एहसास होता है मन मे बसे हो,
हमारे पास ही कहीं,
यह सच है कि दुनिया में,
सदा कोई रहता नहीं
लेकिन हे गुरुवर्या,
जैसे आप गये वैसे जाता भी कोई नहीं।।

इस धरातल पर अस्तित्व सभी का होता है पर व्यक्तित्व विरलों का ही होता है। अस्तित्व सहज मिलता है, पर व्यक्तित्व निर्मित करना पड़ता है। ऐसी ही अद्‌भुत व्यक्तित्व की धनी खरतरगच्छीय प.पू. महान आत्मसाधिका श्री अनुभव श्री जी म.सा. की सुशिष्या सुप्रसिद्ध व्याख्यात्री प.पू. गुरुवर्या श्री हेमप्रभा श्री जी म.सा. थे। जिनकी आकृति में सौम्यता, प्रकृति में सरलता और स्वभाव में सहायकता थी। प.पू. गुरुवर्या श्री का जन-जन के प्रति वात्सल्य व्यवहार, साम्प्रदायिक सद्‌भाव, विश्वबंधुत्व तथा जन-जन के कल्याण के लिए भागीरथ प्रयास आदि सद्‌गुण सहज ही आपके स्वभाव में थे। आपका जीवन जनकल्याण के साथ-साथ परकल्याण की भावना से भी ओतप्रोत था। आपके जैसा आध्यात्मिक, सात्विक, सहज-सरल व्यक्तित्व ढूंढना मुश्किल है। आपका जीवन एक खुली किताब था। जिसका प्रत्येक पृष्ठ कोई भी पढ़ सकता था। आपकी चर्या और चर्चा में अंतर नहीं था। आपको पहचानने के लिए बुद्धि के कुएँकी आवश्यकता नहीं अपितु हृदय का विशाल सागर चाहिऐ। आप ऐसी गुरुवर्या थी जिसे दुनिया सिर्फ पहचानती ही नहीं बल्कि चाहती भी थी। कहते हैं एक दीपक हजार दीपक प्रगटाता है, उसी प्रकार आप भी अपरिभित गुणों की भंडार थी। मैं अल्प बुद्धि आपके किन-किन गुणों का बखान करूं चाहे कितना भी कहुँ न्यूनता ही रहेगी फिर भी इतना जरूर कहूँगी-

आपकी रग-रग में तिरने और तिराने की भावना समाहित थी,
आपकी वाणी में परस्परोपग्रहो जीवानाम् की एक अनुगूंज थी,
आपकी चर्या में तरो और तारो की झलक थी,
आपकी मुस्कुराहट में हंसो और हँसाओ की प्रेरणा थी,
आपकी निगाहों में उठो और उठाओ की सद्‌भावना थी,
आपकी आशीष में संभलो और संभलाओं का दिव्य घोष था।

प.पू. गुरुवर्या श्री संयम जीवन के प्रति चुस्त थी। स्वाध्याय उनके जीवन का प्राण था। वे कहती थीं-स्वाध्याय के बिना संयम जीवन निरस है, 18-18 घंटे का स्वाध्याय प्रतिदिन करती थी। स्वाध्याय की सौरभ उनके प्रवचनों में परिलक्षित होती है। इसलिए कवि गण कहते थे-

सूरज के दर्शन से नीरज खिल जाता है
पारस के स्पर्शन से लोहा सोना बन जाता है
यह कोई आश्चर्य की बात नहीं है बन्धुओ!
गुरुवर्या श्री के चरणों से पापी भी पावन बन जाता है।

'यथानाम तथा गुण' धारिका स्वाध्याय प्रेमी प.पू. विनितप्रज्ञा श्री जी म.सा. का जीवन गुरु समर्पण एवं ज्ञान की गंगा से प्रवाहित था। गुरु के प्रति समर्पण की भावना और श्रद्धा गजब थी। जब गुरुवर्या श्री ने परलोक की ओर प्रयाण किया तो उनके साथ जाने में क्षणिक भी देर नहीं की। गुरु

खरतरगच्छ साधु साध्वी चातुर्मास – 2017

पू. गणनायक श्री सुखसागरजी म. का समुदाय

आज्ञा प्रदाता – पू. गुरुदेव गच्छाधिपति आचार्य श्री जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी म.सा.

प. पू. खरतरगच्छाधिपती आचार्य श्री मणिप्रभसूरीश्वरजी म.सा. ठाणा 8
महावीर भवन, सेठिया डागा पारख मोहल्ला
पो. बीकानेर-334001, फोन : 7597562356
पुकेश : 7987151421, व्हाट्सअप 9825105823
Email : Jahajmandir99@gmail.com
01

पू. उपाध्याय श्री मनोज्ञसागरजी म. ठाणा 2
श्री शांतिनाथ जैन श्वे. मंदिर
पो. चौहटन-344702 जिला-बाड़मेर (राज.)
फोन : 99297 45525
02

पू. मुनि श्री मुक्तिप्रभसागरजी म.
पू. मुनि श्री मनीषप्रभसागरजी म. ठाणा 2
जैन श्वे. खरतरगच्छ समाज भवन,
1945, कच्चा कटरा, कटरा खुशाल राय
किनारी बाजार, पो. दिल्ली-110006 (दिल्ली)
फोन : 931272950/9810109364
03

पू. गणिवर श्री मणिरत्नसागरजी म. ठाणा 2
श्री वासुपूज्य आराधना भवन
A-715, मालवीय नगर
पो. जयपुर-302017 (राज.)
फोन : 0141-2521780
04

पू. मुनि श्री मौनप्रभसागरजी म. ठाणा 5
श्री जिन हरि विहार धर्मशाला
पो. पालीताणा-364270 (गुजरात)
फोन : 02848-252653
मो. 94270 63069
05

पू. महत्तरा श्री दिव्यप्रभाश्रीजी म. ठाणा 4
श्री जिन हरि विहार धर्मशाला
पो. पालीताणा-364270 (गुजरात)
फोन : 02848-252653
मो. 94270 63069
06

पू. प्रवर्त्तिनी श्री शशिप्रभाश्रीजी म. ठाणा
श्री जैन श्वे. खरतरगच्छ धर्मशाला
चूड़ीधरों का मोहल्ला
पो. फलोदी - 342301 (राज.)
07

पू. गणिनी श्री सुलोचनाश्रीजी म. ठाण
श्री चन्द्रप्रभ जैन श्वे. मंदिर उपाश्रय
सेठ कालुराम रतनलाल मालू जैन भवन
38 वेंकटा चलम स्ट्रीट, चूलै
चेन्नई - 600112 फोन : 044-2536 2436
08

पू. गणिनी श्री सूर्यप्रभा श्रीजी म. ठाणा
श्री जैन श्वे. मू. पू. श्री संघ,
रथ गल्ली,
पो. चालीसगांव -424101
जि. जलगांव (महा.)
09

पू. साध्वी श्री मनोरंजना श्रीजी म. ठाणा 8
श्री बकेला पार्श्वनाथ जैन श्वे. तीर्थ
पो. बकेला-491559
तह. पंडरिया जिला कर्धा (छग.)
10

पू. साध्वी श्री पुष्पा श्रीजी म.
श्री विमलनाथ जैन श्वे. मंदिर
पो. बाग बाहरा- 493449
जि. महासमुन्द (छ.ग.)
11

पू. साध्वी श्री प्रियदर्शना श्रीजी म. ठाणा 5
बाबू माधोलाल धर्मशाला, तलेटी रोड़
पो. पालीताना- 364270 (गुजरात)
फोन- 02848253701
12

पू. साध्वी श्री विमलप्रभा श्रीजी म.
जैन श्वे. मंदिर
पद्मावती नगर, अभिनंदन कॉलोनी के पास
पो. मन्दसौर- 458001 (म.प्र.)
13

पू. साध्वी श्री सुलक्षणा श्रीजी म. ठाणा
श्री शांतिनाथ जैन श्वे मंदिर ट्रस्ट
404 टी. एच. रोड़, पुराना धोबी पेठ
पो. चेन्नई- 600021 (तमिलनाडु)
14

पू. माताजी म. श्री रतनमाला श्रीजी म.
पू. बहिन म. डॉ. विद्युत्प्रभा श्रीजी म. ठाणा
श्री शांतिनाथ जी जैन श्वे. मंदिर
श्री शांतिनाथ जी की गली, छोटा सर्राफा
पो. उज्जैन-456006 (म.प्र.)
फोन-
15

पू. साध्वी श्री सम्यग्दर्शना श्रीजी म. ठाणा 4
जैन श्वे. खरतरगच्छ संघ सांचोर
श्री शांतिनाथ जैन मंदिर
विल्सन स्ट्रीट, विल्सन स्कूल के पास,
सी.पी. टेंक रोड़, पो. मुंबई- 400009
16

पू. साध्वी श्री पूर्णप्रभा श्रीजी म. ठाणा
तेली गली नं. 2,
पो. धुलिया 424002 (महा.)
फोन : 9845711450
17

पू. साध्वी श्री विमलप्रभा श्रीजी म. ठाणा
श्री महावीर उपाश्रय नया वास
पो. समदड़ी 344021
जि. बाड़मेर (राज.)
18

पू. साध्वी श्री कल्पलता श्रीजी म. ठाणा 8
श्री जैन श्वे. खरतरगच्छ संघ,
कनक आराधना भवन
काली पोल का उपासरा
पो. नागोर- 341001 (राज.)
19

पू. साध्वी डॉ. श्री लक्ष्यपूर्णा श्रीजी म. ठाणा
श्री जैन श्वे मंदिर नसरतपुरा
मनोहर टाकिज के पीछे
पो. गाजियाबाद 201001 (उ.प्र.)
फोन- 9717228787, 9818499901
20

पू. साध्वी डॉ. श्री शासनप्रभा श्रीज म. ठाणा
श्री बाड़मेर जैन श्री संघ
मॉडल टाउन, पर्वत पाटिया
पो. सूरत- 395010 (गुज.)
21

पू. साध्वी श्री शुभदर्शना श्रीजी म. ठाणा
श्री जैन श्वे. मंदिर
पो. झिनझिनयाली
जि. बाड़मेर (राज.)
22

पू. साध्वी श्री गुणारंजना श्रीजी म.
श्री आदिनाथ जैन श्वे. मंदिर
नेहरु गेट
पो. ब्यावर- 305601 (राज.)
23

पू. साध्वी श्री सौम्यगुणा श्रीजी म. ठाणा
जावेरी बाड़ी विद्यापीठ
पो. पाटण- 384265
(गुज.)
24

खरतरगच्छ साधु साध्वी चातुर्मास – 2017

पू. गणनायक श्री सुखसागरजी म. का समुदाय

आज्ञा प्रदाता – पू. गुरुदेव गच्छाधिपति आचार्य श्री जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी म.सा.

पू. साध्वी श्री प्रियस्मिता श्रीजी म. ठाणा
श्री जैन श्वे मू. पू. संघ
58/39 बिरहाना रोड़
पो. कानपुर (उ.प्र.)
फोन- 3957295, 7353460623
25

पू. साध्वी श्री विश्वरत्ना श्रीजी ठाणा 4
श्री जैन श्वे खरतरगच्छ संघ
लोढों का वास
पाली- 306401
(राज.)
26

पू. साध्वी श्री प्रियरंजना श्रीजी म. ठाणा 3
श्री जैन श्वे. मू.पू. संघ ट्रस्ट,
276-277 New Street
तिरुपति 517501
(आ.प्र.)
फोन : 0877-2254433
27

पू. साध्वी विनीतयशा श्रीजी म. प्रज्ञमिता श्रीजी ठाणा 4
जैन भवन
पो. जैसलमेर-345001
(राज.)
28

पू. साध्वी श्री अमितगुणा श्रीजी ठाणा
श्री शंखेश्वर पार्श्व जिनदत्तसूरि खरतरगच्छ ट्रस्ट
18 एक वीरा दर्शन, गीतांजली नगर
पो. भायन्दर (वेस्ट) 401101
जि- ठाणे (महा.)
29

पू. साध्वी श्री विरागज्योति श्रीजी म.
पू. साध्वी श्री विश्वज्योति श्रीजी म. ठाणा 3
जैन श्वे. मंदिर
पो. खापर- 425419
जि.- नंदुरबार (महा.)
30

पू. साध्वी श्री संघ मित्रा श्रीजी म. ठाणा 3
जैन उपाश्रय, हनुमान मंडी
पो. नलखेडा-465445
जि. आगर
(म.प्र.)
31

पू. साध्वी श्री शुद्धांजना श्रीजी म. ठाणा 6
जैन श्वे. मंदिर, छमंत AVS, Madabam
76-Chetty Street
पो. तिरूपातूर 635601 (तमिलनाडु) (VDT)
फोन- 9443006831
32

पू. साध्वी श्रद्धांजना श्रीजी ठाणा 2
श्री शंखेश्वर जैन श्वे. दादावाड़ी
G.E.B. सब स्टेशन के पास,
अहमदाबाद- शंखेश्वर हाइवे
पो. शंखेश्वर- 384246 (गुज.)
फोन- 02733-273505
33

पू साध्वी डॉ. श्री नीलांजना श्रीजी म. ठाणा
श्री जैन श्वे. दादावाड़ी सूरजपोल बाहर,
मेवाड़ मोटर्स लिंक रोड़
पो. उदयपुर- 313001 (राज.)
फोन- 0294-2421047
34

पू. साध्वी श्री संयमज्योति श्रीजी म. ठाणा 2
जैन श्वे. खरतरगच्छ संघ,
जैन श्वे. दादावाड़ी
10 वीं ए. रोड़, सरदारपुरा
पो. जोधपुर (राज.)
35

पू. साध्वी श्री प्रियश्रद्धांजना श्रीजी म. ठाणा 6
सुगनजी का उपासरा
रांगडी चौक
पो. बीकानेर 334001
(राज.)
36

पू. साध्वी श्री प्रियस्नेहांजना श्रीजी म. ठाणा 3
श्री जिनदत्तसूरि खरतरगच्छ भवन
दादा साहेब नां पगलां, नवरंगपुरा
पो. अहमदाबाद- 380009
(गुज.)
37

पू. साध्वी श्री प्रिय सौम्यांजना श्रीजी म. ठाणा 4
श्री जैन श्वे. खरतरगच्छ कुशल भवन शांतिनगर
पो. सांचोर- 343041 जि. जालोर
(राज.)
फोन- 02879- 283154
38

पू. साध्वी श्री स्नेहयशा श्रीजी म. ठाणा 2
जैन बगीचा, सदर बाजार
पो. राजनांद गांव- 491441
(छ.ग.)
फोन- 9425240300, 9827161213
39

पू. साध्वी श्री मधुरिमा श्रीजी म. ठाणा
इशाक भवन, नवपद सोसायटी के पास
आजवा रोड़
पो. बड़ौदा- 396006 (गुज.)
40

पू. साध्वी श्री अभ्युदया श्रीजी म. ठाणा 3
श्री शीतलवाड़ी खरतरगच्छ जैन उपाश्रय
ओसवाल मोहल्ला, गोपीपुरा
पो. सूरत- 395001 (गुज.)
41

पू. साध्वी श्री अनंतदर्शना श्रीजी म. ठाणा 3
जैन श्वे. धर्मशाला
पो. बाछडाऊ- 344708 वाया सनावडा
जि. बाड़मेर (राज.)
42

पू. साध्वी श्री श्वेतांजना श्रीजी ठाणा 3
महावीर भवन
पो. मोकलसर- 344044
जि. बाड़मेर (राज.)
43

पू. साध्वी श्री रत्ननिधि श्रीजी म. ठाणा 3
श्री ऋषभदेव मंदिर ट्रस्ट, सदर बाजार
पो. रायपुर- 492001 (छग.)
फोन- 0771-226765
44

पू. साध्वी श्री दर्शनप्रभा श्रीजी म. ठाणा 3
श्री आदिनाथ जैन श्वे. कांच का मंदिर
नयापुरा
पो. मन्दसौर (म.प्र.) 458001
45

पू. साध्वी श्री विरल प्रभा श्रीजी म. ठाणा 2
कुशल कान्ति खरतरगच्छ संघ
कुशल वाटिका, पाल रोड़
पो. सूरत- 395009 (गुजरात)
46

सूचना

इनके अलावा खरतरगच्छीय साधु-साध्वीजी भगवंतोंकी पूर्ण सूची प्राप्त होने पर अगले अंक में प्रकाशितकी जायेगी ।

नगीना नगरी नागौर में

भव्य चातुर्मास प्रवेश प्रसंगे

आमंत्रण

शुभ मंगल प्रवेश : 2 जुलाई 2017

प. पू. गुरुवर्या
श्री हेमप्रभा श्रीजी म.सा.

प. पू. साध्वी
श्री कल्पलता श्रीजी म.सा.

प. पू. खरतरगच्छाधिपति आचार्य भगवन्त श्री जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी म.सा.
की आज्ञानुवर्तिनी प. पू. आत्मसाधिका अनुभव श्रीजी म.सा. की सुशिष्या
पू. प्रखर गुरुवर्या श्री हेमप्रभाश्रीजी म.सा. की सुशिष्यायें

प. पू. विदुषीवर्या श्री कल्पलता श्रीजी म.सा.
साध्वी अमितयशा श्रीजी म.सा.
साध्वी शीलांजना श्रीजी म.सा.
साध्वी दीपशिखा श्रीजी म.सा.
साध्वी धर्मनिधि श्रीजी म.सा.
साध्वी जयप्रिया श्रीजी म.सा.
साध्वी कल्याणमाला श्रीजी म.सा.
साध्वी भव्यप्रिया श्रीजी म.सा.

चातुर्मास प्रवेश की मंगल वेला में आप सहृदय पधार कर संघ को लाभान्वित करें।

विनित

श्री जैन श्वेताम्बर खरतरगच्छ श्रीसंघ

कनक आराधना भवन, कालीपोल का उपासरा, नागौर (राज.)

केलवचंद डागा	गौतमचन्द कोठारी	प्यारेलाल बोथरा	केवलचंद बच्छावत	कमलचंद डोसी
संरक्षक	अध्यक्ष	उपाध्याक्ष	सचिव	कोषाध्यक्ष
	94133 69401			

समर्पण का यह अनूठा उदाहरण इतिहास के पन्नों में लिखे ही मिलता है। उनका आत्मा में राग का रोग नही, द्वेष का दावानल और क्लेश की कालिमा नहीं। उनके रग-रग में गुरु के प्रति बहुमान था, अणु-अणु में जीवों के प्रति अनुंकपा थी। पल-पल आत्मीयता का स्त्रोत प्रवाहित होता था। उनकी वाणी से सुस्त व्यक्ति भी चुस्त हो जाता था तथा रोगी भी निरोगिता का अनुभव करता था।

एक ऐसी गुरुवर्याद्वय जो कि ज्येष्ठ सुदी सप्तमी के दिन हमें इस संसार रूपी वीरान जंगल में छोड़कर चली गयी। उनकी 10 वीं भावांजलि दिवस के अवसर पर उनके गुणों का गुणगान करके अपने जीवन में भी उन गुणों को अपनाकर इस श्रद्धांजलि दिवस को श्रद्धा पूर्वक मनाकर सच्ची श्रद्धांजलि, भावांजलि एवं स्मरंणाजली देकर अपने जीवन को धन्य बनावें।

व्यक्ति चला जाता है स्मृतियाँ रह जाती है,
हर फूल की सुवास एक मिट्टी में रह जाती है,

धन्य है वे जग में जिनके जाने के बाद, श्रद्धा और आस्था भरी गाथा रह जाती है।

पूज्य श्री का कार्यक्रम

पूज्य गुरुदेव खरतरगच्छाधिपति आचार्य भगवंत श्री जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी म.सा. आदि ठाणा नीमच से विहार कर निम्बाहेडा, चित्तौड, भीलवाडा, बिजयनगर होते हुए ता. 19 को ब्यावर पधारेंगे। वहाँ से विहार कर ता. 25 को नागोर पधारेंगे।

पूज्यश्री के इस प्रवास में उज्जैन, महिदपुर, सीतामऊ, मन्दसौर, नीमच, निम्बाहेडा, चित्तौड, भीलवाडा आदि क्षेत्रों के युवाओं ने विहार में पूरी सेवाऐं दी। विशेष रूप से भीलवाडा निवासी श्री सुमित दुनीवाल की सेवाऐं बहुत ही अनुमोदनीय रही।

संपर्क : **पू. आचार्य श्री जिनमणिप्रभसूरिजी म.**
महावीर भवन, सेठिया डागा, पारख मोहल्ला, बीकानेर- 334001 (राज.)
फोन: मुकेश- 7987151421, 9825105823

पूज्यश्री से आशीर्वाद प्राप्त करते म.प्र. सरकार के मंत्री श्री पारसजी जैन एवं हिम्मतजी कोठारी

धनारामजी पुरोहित से चर्चा करते हुए पूज्यश्री

पूज्यश्री से आशीर्वाद लेते सुमित दुनिवाल

धुलिया नगरे

मंगल प्रवेश पर हार्दिक आमंत्रण

दिव्याशीष
प. पू. महत्तरापद विभूषिता
श्री चम्पाश्रीजी म.सा.
प. पू. समता साधिका
श्री जितेन्द्र श्रीजी म.सा.

आज्ञा प्रदाता

प. पू. खरतरगच्छाधिपति आचार्य
श्री जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी म.सा.

प. पू. खरतरगच्छाधिपति मरुधर मणि आचार्य भगवंत
श्री जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी म.सा. की आज्ञानुवर्तिनी
प. पू. महत्तरा पद विभूषिता
चंपाश्रीजी म.सा. की विदुषी शिष्या
प. पू. गच्छगणिनी पद विभूषिता
मारवाड़ ज्योति श्री सूर्यप्रभाश्रीजी म.सा. की चरणाश्रिता

दिव्याशीष

प. पू. चम्पाश्रीजी म.सा.

साध्वी श्री पूर्णप्रभाश्रीजी (भागु) म.सा.

प. पू. साध्वी श्री हर्षपूर्णाश्रीजी म.सा. आदि ठाणा

चातुर्मासार्थ निश्रा

प. पू. साध्वी श्री
पूर्णप्रभाश्रीजी (भागु) म.सा.

चातुर्मास भव्य प्रवेश 3 जुलाई 2017, सोमवार

प्रवेश के शुभ अवसर पर समस्त श्रीसंघ पधार
कर जिनशासन की शोभा बढ़ावें ।

आयोजक

श्री शीतलनाथ भगवान संस्थान
तेली गली नं. 2, पो. धुलिया-2424002 (महा.)

सम्पर्क सूत्र

श्रीपाल मुणोत : 9422285367
दिनेशभाई वेदमुथा : 9923610022
हरिषभाई शाह : 9923312032
प्रेमचंद नाहर : 9422787210
विजयभाई राठोड़ : 9422787111
प्रकाश चौहान 9845711450

मातृ दिवस पर विशेष आलेख
14 मई 2017

जहाँ माँ का सम्मान नहीं वहाँ देवता का वास नहीं

कैलाश बी. संखलेचा

आज मातृ दिवस है, एक ऐसा दिन जिस दिन हमें संसार की समस्त माताओं का सम्मान और सलाम करना चाहिये। वैसे माँ किसी के सम्मान की मोहताज नहीं होती, माँ शब्द ही सम्मान के बराबर होता है, मातृ दिवस मनाने का उद्देश्य पुत्र के उत्थान में उनकी महान भूमिका को सलाम करना है। श्रीमद भागवत गीता में कहा गया है कि माँ की सेवा से मिला आशीर्वाद सात जन्म के पापों को नष्ट करता है। यही माँ शब्द की महिमा है। असल में कहा जाए तो माँ ही बच्चे की पहली गुरु होती है एक माँ आधे संस्कार तो बच्चे को अपने गर्भ मैं ही दे देती है यही माँ शब्द की शक्ति को दशार्ता है, वह माँ ही होती है पीडा सहकर अपने शिशु को जन्म देती है। और जन्म देने के बाद भी माँ के चेहरे पर एक सन्तोषजनक मुस्कान होती है इसलिए माँ को सनातन धर्म में भगवान से भी ऊँचा दर्जा दिया गया है।

माँ शब्द एक ऐसा शब्द है जिसमे समस्त संसार का बोध होता है। जिसके उच्चारण मात्र से ही हर दुख दर्द का अंत हो जाता है। 'माँ' की ममता और उसके आँचल की महिमा को शब्दों में बयान नहीं किया जा सकता है, उसे सिर्फ महसूस किया जा सकता है। गीता में कहा गया है कि 'जननी जन्मभूमिश्य स्वर्गदपि गरीयसी'। अर्थात, जननी और जन्मभूमि स्वर्ग से भी बढ़कर है। कहा जाए तो जननी और जन्मभूमि के बिना स्वर्ग भी बेकार है क्योंकि माँ कि ममता कि छाया ही स्वर्ग का एहसास कराती है। जिस घर में माँ का सम्मान हनीं किया जाता है वो घर नरक से भी बदतर होता है, भगवान श्रीराम माँ शब्द को स्वर्ग से बढकर मानते थे क्योंकि संसार में माँ नहीं होगी तो संतान भी नहीं होगी और संसार भी आगे नहीं बढ पाएगा। संसार में माँ के समान कोई सहारा नहीं है। संसार में माँ के समान कोई रक्षक नहीं है और माँ के समान कोई प्रिय चीज नहीं है। एक माँ अपने पुत्र के लिए छाया; सहारा, रक्षक का काम करती है। माँ के रहते कोई भी बुरी शक्ति उसके जीवित रहते उसकी संतान को छू नहीं सकती। इसलिए एक माँ ही अपनी संतान की सबसे बडी रक्षक है। दुनिया में अगर कहीं स्वर्ग मिलता है तो वो माँ के चरणों में मिलता है। जिस घर में माँ का अनादर किया जाता है, वहाँ कभी देवता वास नहीं करते। एक माँ ही होती है जो बच्चे कि हर गलती को माफ कर गले से लगा लेती है। यदि नारी नहीं होती तो सृष्टि की रचना नहीं हो सकती थी। स्वंय ब्रह्मा, विष्णु और महेश तक सृष्टि की रचना करने में असमर्थ बैठे थे। जब ब्रह्मा जी ने नारी की रचना की तभी से सृष्टि की शुरुआत हुई। बच्चे की रक्षा के लिए बड़ी से बड़ी चुनौती का डटकर सामना करना और बड़े होने पर भी वही मासूमियत और कोमलता भरा व्यवहार ये सब ही तो हर 'माँ' की मूल पहचान है।

दुनिया की हर नारी में मातृत्व वास करता है। बेशक उसने संतान को जन्म दिया हो या न दिया हो। नारी इस संसार और प्रकृति की 'जननी' है। नारी के बिना तो संसार की कल्पना भी नहीं की जा सकती। इस सृष्टि के हर जीव और जन्तु की मूल पहचान माँ होती है। अगर माँ न हो तो संतान भी नहीं होगी और न ही सृष्टि आगे बढ पाएगी। इस संसार में जितने भी पुत्रों की मां हैं, वह अत्यंत सरल रूप में हैं। कहने का मतलब कि मां एकदम से सहज रूप में होती हैं। वे अपनी संतानों पर शीघ्रता से प्रसन्न हो जाती हैं। वह अपनी समस्त खुशियां अपनी संतान के लिए त्याग देती हैं, क्योंकि पुत्र कुपुत्र हो सकता है, पुत्री कुपुत्री हो सकती है, लेकिन माता कुमाता नहीं हो सकती। एक संतान माँ को घर से निकाल सकती है लेकिन माँ हमेशा अपनी संतान को आश्रय देती है। एक माँ ही है जो अपनी संतान का पेट भरने के लिए खुद भूखी सो जाती है और उसका हर दुख दर्द खुद सहन करती है।

लेकिन आज के समय में बहुत सारे ऐसे लोग हैं जो अपने माता-पिता को बोझ समझते हैं। और उन्हें वृध्दाआश्रम में रहने को मजबूर करते हैं। ऐसे लोगों को आज के दिन अपनी गलतियों का पश्चाताप कर अपने माता-पिताओं को जो वृद्ध आश्रम में रह रहे हैं उनको घर लाने के लिए अपना कदम बढाना चाहिए। क्योंकि माता-पिता से बढकर दुनिया में

श्री वड़ोदरा नगरे

चातुर्मास मंगल प्रवेश पर हार्दिक आमन्त्रण

आज्ञा प्रदाता

प.पू.खरतरगच्छाधिपति आचार्य
श्री जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी म.सा.

कृपा दृष्टि

प.पू.चम्पाकली, गणिनीपद
विभुषिता प.पू.गुरुवर्या
श्री सूर्यप्रभा श्रीजी म.सा.

दिव्याशीष
प. पू. महत्तरापद विभूषिता
श्री चम्पाश्रीजी म.सा.
प. पू. समता साधिका
श्री जितेन्द्र श्रीजी म.सा.

प. पू. खरतरगच्छाधिपति मरुधर मणि आचार्य भगवंत
श्री जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी म.सा. की आज्ञानुवर्तिनी
प. पू. महत्तरा पद विभूषिता चंपाश्रीजी म.सा. की विदुषी शिष्या
प. पू. गच्छगणिनी पद विभूषिता मारवाड़ ज्योति श्री सूर्यप्रभाश्रीजी म.सा.
प. पू. स्नेह सुरभि श्री पूर्णप्रभाश्रीजी (भागु) म.सा. की चरणाश्रिता
शासन प्रभाविका प. पू. साध्वी श्री मधुरिमाश्रीजी म.सा.आदि ठाणा

वर्षावास निश्रा

प.पू.साध्वी
श्री मधुरिमाश्रीजी म.सा.

चातुर्मास भव्य प्रवेश

29 जून 2017, गुरुवार

प्रवेश के शुभ अवसर पर समस्त श्रीसंघ पधार
कर जिनशासन की शोभा बढ़ावें।

निमंत्रक

लक्ष्मीबेन फोजमल झाबक
खरतरगच्छ जैन उपाश्रय, 9-B, दूधेश्वर सोसायटी,
झाबक भवन के पीछे, आजवा रोड़, वड़ोदर-390019 (गुज.)

सम्पर्क सूत्र :

नरेश पारख (प्रमुख) 9825335117, अल्पेश झाबक 9825318303
दिनेश वर्मा (मैनेजर) 9898228714, मुमुक्षु नम्बर 8469399891

कोई नहीं होता। माता के बारे में कहा जाए तो जिस घर में माँ नहीं होती या माँ का सम्मान नहीं किया जाता वहाँ दुर्गा, लक्ष्मी और सरस्वती का वास नहीं होता। हम नदियों और अपनी भाषा को माता का दर्जा दे सकते हैं तो अपनी माँ से वो हक क्यों छीन रहे हैं। और उन्हें वृद्धाआश्रम भेजने को मजबूर कर रहे है। यह सोचने वाली बात है। माता के सम्मान का एक दिन नहीं होता। माता का सम्मान हमें 365 दिन करना चाहिए। लेकिन क्यों न हम इस मातृ दिवस से अपनी गलतियों का पश्चाताप कर उनसे माफी मांगें। और माता की आज्ञा का पालन करने और अपने दुराचरण से माता को कष्ट न देने का संकल्प लेकर मातृ दिवस को सार्थक बनाएं।

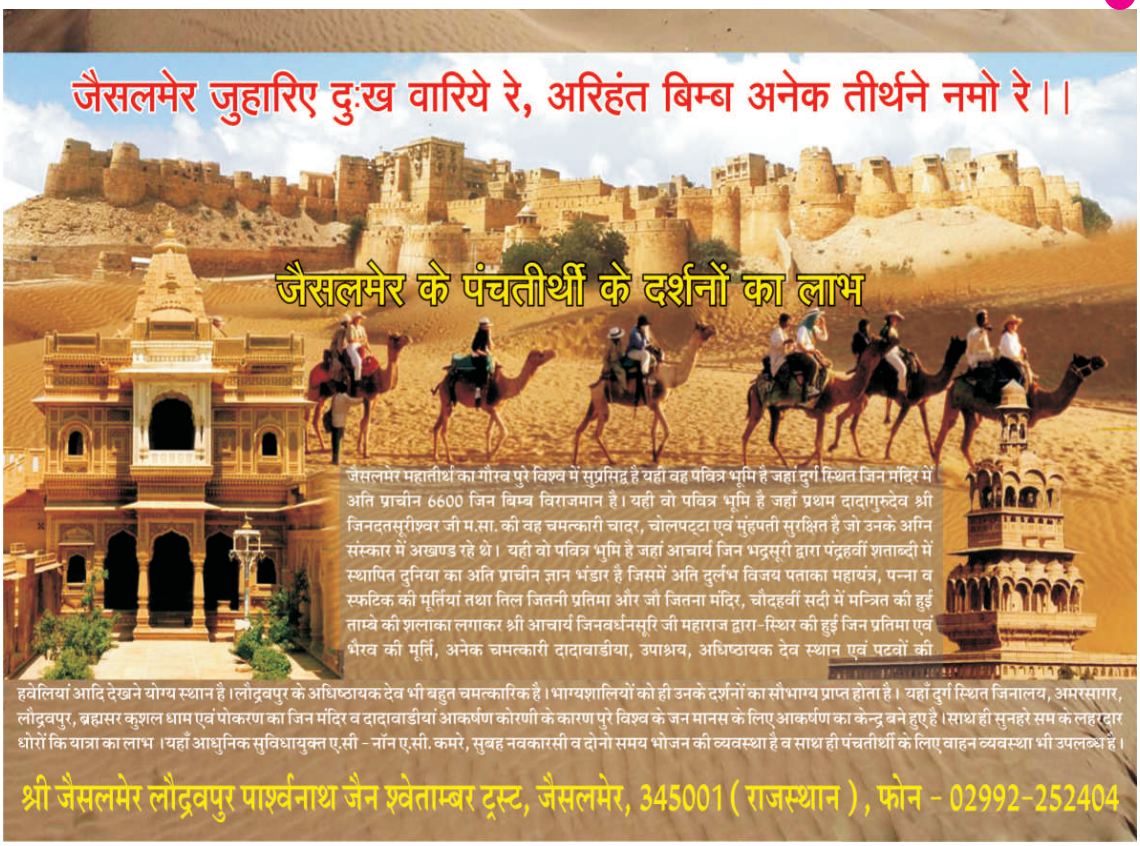

जयपुर खरतरगच्छ संघ के चुनाव

श्री जैन श्वेताम्बर खरतरगच्छ संघ, जयपुर के चुनाव 28 मई 2017 को संपन्न हुए, जिसमें श्री प्रकाशचंद जी लोढ़ा अध्यक्ष के रुप में चुने गया। श्रीमती निर्मलादेवी पुगलिया वरिष्ठ उपाध्यक्ष, श्री कमलचंदजी सुराना उपाध्यक्ष, श्रीज्योति कोठारी संघमंत्री एवं श्री बिरदमलजी दासोत कोषाध्यक्ष चुने गये।

पू. मोहनलालजी म. का समुदाय

पू. पंन्यास श्री विनय कुशल मुनि गणी ठाणा 8
गजभंवर धर्मशाला, तलेटी के पास
पो. पालीताना- 364270 (गुज.)
01

पू. साध्वी श्री कुशल श्रीजी म.
श्री केसरियानाथ धर्मशाला
पो. जोधपुर-342001 (राज.)
02

पू. साध्वी श्री विरतियशा श्रीजी म. ठाणा 2
गजभंवर धर्मशाला, तलेटी के पास
पो. पालीताना- 364270 (गुज.)
03

॥ श्री मुनिसुव्रतस्वामि ने नमः ॥
॥ दादा श्री जिनदत्त, मणिधारी जिनचन्द्र, जिनकुशल, जिनचन्द्रसूरि सद्गुरुभ्यो नमः ॥
॥ श्री प. पू. गणनायक श्री सुखसागर सद्गुरुभ्यो नमः ॥
मंदिरों के शिखरों पर ध्वजाओं से सुशोभित
संस्कारों की शंखनाद - धर्ममय नगरी सूरत की पावनधरा पर
भव्यातिभव्य चातुर्मास प्रवेश प्रसंगे
सकल श्री संघ को
स्नेहभरा आमंत्रण...
संवत २०७४ अषाढ़ सुद १२ दिनांक 05/07/2017 बुधवार
प. पू. खरतरगच्छाधिपति आचार्य जिनमणिप्रभसूरिश्वरजी म.सा. की आज्ञा से
पूजनीय बहिन म. डॉ. विद्युत्प्रभाश्रीजी म.सा. की सुशिष्या
का चातुर्मास हमारे संघ को मिला हैं ।
पावन निश्रा
प. पू. साध्वी श्री शासनप्रभा श्रीजी म.सा.
प. पू. साध्वी श्री नीतिप्रज्ञा श्रीजी म.सा.
प. पू. साध्वी श्री आज्ञांजना श्रीजी म.सा.
बाड़मेर जैन श्री संघ, सूरत.
अध्यक्ष : चंपालाल बोथरा
उपाध्यक्ष : सुरेन्द्रकुमार सेठीया, दिनेशकुमार संकलेचा
सचिव : सुरेशकुमार मालू
सहसचिव : गौतमचंद छाजेड़
कोषाध्यक्ष : अशोककुमार छाजेड़
सहकोषाध्यक्ष : दिलीपकुमार बोहरा
संगठन मंत्री : पवनकुमार बोथरा
प्रचार प्रसार मंत्री : ओमप्रकाश संकलेचा
ट्रस्टी : हनुमान मालू, मांगीलाल लूणिया, चंपकुमार धारीवाल, चंपकुमार छाजेड़, ओमप्रकाश नाहटा, पवनकुमार डोसी, अनिलकुमार भंसाली, पवनकुमार पारख
बाड़मेर जैन श्री संघ, सूरत.
चातुर्मास कमिटी 2017
संयोजक : पारसमल बोथरा, बाबूलाल संकलेचा, बाबूलाल मालू, अमृतलाल पारख, गौतमचंद बोहरा (हालावाला)
अध्यक्ष : अशोककुमार बोथरा (ठाकर)
उपाध्यक्ष : सम्पतराज संखलेचा, गौतमचंद बोथरा, कैलाश कुमार मालू
सचिव : अशोककुमार छाजेड़
सहसचिव : नरेशकुमार छाजेड़ (हालावाला)
कोषाध्यक्ष : प्रकाशचंद तातेड़, पूरचंद बोथरा
प्रचार प्रसार मंत्री : गौतमचंद पारख, राजेन्द्रकुमार भंसाली, महेशकुमार लूणीया
अध्यक्ष
चम्पालाल बोथरा 94261-57835
अध्यक्ष
अशोक बोथरा 93757-21000
विनित :- बाड़मेर जैन श्री संघ, सूरत.

पूज्य श्री राजकीय अतिथि घोषित

पूज्य गुरुदेव खरतरगच्छाधिपति आचार्य भगवंत श्री जिनमणिप्रभ सूरीश्वरजी म.सा. को राजस्थान सरकार ने राज्य अतिथि का दर्जा देकर सम्मानित किया है। यह घोषणा मुख्यमंत्री वसुंधरा राजे की ओर से स्वायत्त शासन मंत्री श्री श्रीचन्दजी कृपलानी ने निम्बाहेडा में आयोजित धर्मसभा में की।

जिसका उपसिथत विशाल जन समूह ने कर तल ध्वनि से अपने हर्ष को प्रकट किया।

पूज्य आचार्य श्री उज्जैन से विहार कर महिदपुर, नागेश्वर, मन्दसौर होते हुए ता. 8 को नीमच पधारे, जहाँ श्री भीडभंजन पार्श्वनाथ जैन श्वे. मू. पू. श्री संघ द्वारा भव्य स्वागत किया गया। शोभायात्रा में हजारों श्रद्धालुओं की भव्य उपस्थिति रही। नाश्ते का लाभ अ.भा. खरतरगच्छ युवा परिषद् नीमच शाखा द्वारा लिया गया। स्वामिवात्सल्य का लाभ श्री गोरधन सिंह जी बाफना परिवार द्वारा लिया गया। पूज्यश्री का प्रभावशाली प्रवचन 1 बजे तक चला। विधायक ओमप्रकाशजी संखलेचा ने स्वागत किया। श्री संघ अध्यक्ष अनिल नागोरी ने स्वागत भाषण दिया। कामली वहोराने का लाभ गोपावत परिवार ने लिया। एक विशिष्ट कलाकार द्वारा थ्री डी में बनाये गये पूज्यश्री के चित्र का अनावरण गोपावत परिवार द्वारा किया गया। नीमच से विहार कर ता. 9 को पूज्य श्री निम्बाहेडा पधारे, जहाँ श्री संघ द्वारा अभिनंदन किया गया।

स्वायत्त शासन मंत्री श्री चन्दजी कृपलानी, सांसद श्री सी.पी. जोशी, पूर्व विधायक श्री अशोकजी नवलखा, नगरपालिका चेयरमेन कन्हैयालाल पंचोली, उपाध्यक्ष श्री पारस पारख आदि गणमान्य लोगों की उपस्थिति रही। इस अवसर पर उदयपुर, नीमच, चित्तौड, भीलवाडा आदि कई संघ उपस्थित थे।

मिन्नी / खजांची / भुगडी गोत्र का इतिहास

0 आचार्य जिनमणिप्रभसूरि

गोत्र का इतिहास

ये तीनों गोत्र एक ही परिवार की शाखाऐं हैं। इस गोत्र की उत्पत्ति चौहान राजपूतों से हुई है। संवत् 1216 में दूसरे दादा गुरुदेव मणिधारी जिनचन्द्रसूरीश्वरजी म. सा. के करकमलों द्वारा इस गोत्र की स्थापना हुई थी।

इतिहास कहता है कि एक बार मोहनसिंह चौहान उधार वसूली करके काफी धनराशि के साथ अपने शहर की ओर लौट रहे थे। बीच में डाकुओं का सामना हो गया। शस्त्रधारी डाकुओं के सामने सारा धन, सोना चांदी मोहरें आभूषण डाकुओं के हवाले कर दिये। पर बातों ही बातों में डाकुओं को उलझा कर एक रूक्के पर डाकुओं के सरदार के हस्ताक्षर करवा लिये। उस रूक्के में लूंटे गये धन का पूरा विवरण लिखा था, जिसे डाकु समझ नहीं पाये। साथ ही वहीं पर राह चलती एक वृद्ध महिला की साक्षी भी उसमें अंकित कर दी।

कुछ समय बाद संयोगवश डाकू उसी नगर में सेठ मोहनसिंह चौहान से लूंटा हुआ माल बेचने के लिये आये। इसे भी संयोग ही कहना चाहिये कि माल बेचने सेठ मोहनसिंह की दुकान के पगथिये चढने लगे। माल देखते ही मोहनसिंह ने डाकुओं को पहचान लिया।

डाकुओं को बातों में उलझाकर अपने सेवक द्वारा वहाँ के राजा के पास पूरा संदेश भेज कर सैनिकों को बुलवा लिया। सैनिकों ने डाकुओं को गिरफ्तार कर लिया।

राज्य के नियमानुसार डाकुओं पर केस चलाया गया। डाकुओं ने लूट से बिल्कुल इन्कार कर दिया। क्योंकि वे जानते थे कि सच बोलने से जेल जाना होगा।

यहाँ हमें एक ही स्वर में इन्कार करना है। फिर यह न्यायाधीश कैसे सिद्ध कर पायेगा कि लूट हमने की है।

न्यायाधीश ने गवाह के संदर्भ में सवाल किया। मोहनसिंह ने चतुराई से विचार कर कहा– हुजूर उस जंगल में और तो कोई साक्षी नहीं था, एक मिन्नी जरूर थी। मिन्नी मारवाडी में बिल्ली को कहते हैं।

यह सुनते ही डाकु चिल्ला उठे– कहाँ थी मिन्नी! उस समय तो वहाँ डोकरी थी। और तुम डोकरी को मिन्नी कहते हो!

मोहनसिंह चौहान उसकी बात को सुनकर मुस्कुरा उठा। न्यायाधीश ने मोहनसिंह की चतुराई को भांप लिया। वे समझ गये कि लूट की घटना सही है। तभी तो वहाँ यह डोकरी की बात कर रहा है।

न्यायाधीश ने लूट का सारा धन मोहनसिंह को वापस दिलवा दिया। मिन्नी वाली बात इतनी प्रसिद्ध हुई कि वे मिन्नी कहलाने लगे।

इन्हीं मोहनसिंह चौहान ने द्वितीय दादा मणिधारी जिनचन्द्रसूरि से वि. सं. 1216 में जैन धर्म स्वीकार किया। गुरुदेव ने मिन्नी गोत्र की स्थापना की।

परिवार में बोहर गत का व्यवसाय करने लगे। इस कारण इनके वंशज कांधल बोहरा कहलाये। इस परिवार के जांजणजी जैसलमेर की राजकुमारी गंगा के साथ विवाह कर बीकानेर आकर बसे। बीकानेर के महाराजा ने जांजणजी के पुत्र रामसिंह को अपने राज्य के खजाने का काम सौंपा। कई वर्षों तक खजाने का कार्य करने से इनका परिवार खजांची कहलाया। इसी परिवार के एक वंशज सिंध देश में वहाँ के प्रसिद्ध भुगडी बेरों का व्यापार करते थे। इस कारण भुगडी शाखा की प्रसिद्धि हुई।

समाचार दर्शन

पूज्यश्री का उज्जैन नगरी में भव्य प्रवेश

पूज्य गुरुदेव गच्छाधिपति आचार्य भगवंत श्री जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी म.सा. पूज्य मुनि श्री मनितप्रभसागर जी म. पू. मुनि श्री समयप्रभसागर जी म. पू. मुनि श्री विरक्तप्रभसागरजी म. पू. मुनि श्री श्रेयांसप्रभसागरजी म. पू. बाल मुनि श्री मलयप्रभसागरजी म. ठाणा 6 दुर्ग नगर में प्रतिष्ठा संपन्न करवाकर विहार करते हुए राजनांद गांव पधारे जहाँ श्री संघ द्वारा सामैया करने के पश्चात् प्रवचन हुआ तथा श्री चौपड़ाजी के पगले किये गये। वहाँ से विहार कर भंडारा होते हुए नागपुर पधारे जहाँ सामैया के बाद प्रवचन का आयोजन किया गया। प्रवचन के बाद स्वामि वात्सल्य रखा गया। वहाँ से विहार कर पूज्य श्री बेतुल, टिमरनी, हरदा, शिवपुर, देवास होते हुए ता. 30 मई को उज्जैन नगर पधारे।

उज्जैन नगर में भव्यातिभव्य प्रवेश का आयोजन संपन्न हुआ। श्री अवंती पार्श्वनाथ तीर्थ से शोभा यात्रा प्रारंभ हुई जो विभिन्न मार्गों से होती हुई श्री शांतिनाथ मंदिर पहुँची। जहाँ पूज्यश्री का प्रवचन हुआ।

पूज्यश्री ने अवंति पार्श्वनाथ तीर्थ की महिमा का वर्णन करते हुए जीर्णोद्धार की स्मृतियां सुनाई। उन्होंने कहा- अब हमें प्रतिष्ठा की तैयारियां करनी है। सकल श्री संघ को हिल मिल कर तैयारियां करनी है। इस अवसर पर पू. मुनि श्री मनित प्रभसागरजी म. ने भी प्रवचन दिया। महिला मंडल द्वारा स्वागत गीत व पुखराजजी चौपड़ा ने पूज्य श्री के कृतित्व का विस्तार से वर्णन किया। संचालन मनोज कोचर ने किया। स्वामिवात्सल्य का आयोजन जिनेश्वर युवा परिषद् द्वारा किया गया। यह ज्ञातव्य है कि श्री अवंती तीर्थ का जीर्णोद्धार पूज्य आचार्य श्री की निश्रा में उनकी प्रेरणा से चल रहा है।

पूज्य श्री के उज्जैन प्रवेश पर इन्दौर, महिदपुर, अहमदाबाद, रायपुर, दुर्ग, देवास, सूरत, देपालपुर, रतलाम, प्रतापगढ़, आदि क्षेत्रों से बड़ी संख्या में श्रद्धालु लोग पधारे थे।

महाराष्ट्र के खापर में जिनमंदिर प्रतिष्ठा स्वर्ण जयंती महोत्सव में बना एक नया इहितास

महाराष्ट्र के नंदुरबार जिले के खापर नगर में स्थित श्री नेमीनाथ जिनालय के प्रतिष्ठा की 50 वी वर्षगांठ दि. 15.16 और 17 मई 2017 को 'त्रिदिवसीय स्वर्ण जयन्ति महोत्सव' के भव्य आयोजन के साथ धूम-धाम से मनाई गई।

जिनमंदिर की 50 वीं वर्षगांठ के उपलक्ष में विशेष आयोजन में निश्रा प्रदान करने हेतु श्री संघ ने पू. गच्छाधिपति आचार्य श्री जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी म.सा. एवं पू. महत्तरापद अलंकृता श्री दिव्यप्रभाश्रीजी म.सा. के श्री चरणों में श्री संघ की विनंती को स्वीकार करते हुए पू. आचार्य श्री के आज्ञा से पूज्य गुरुवर्या श्री ने अपनी शिष्या पू. साध्वी श्री विरागज्योति श्रीजी म.सा. आदि ठाणा 3 को इस मंगल महोत्सव में निश्रा प्रदान करने की स्वीकृति दी।

महोत्सव की आज्ञा मिलते ही श्री संघ की महोत्सव आयोजन समिति पू. साध्वी श्री विश्वज्योति श्रीजी म.सा. के संपर्क में रही तथा समय-समय पर महोत्सव के आयोजन का मार्गदर्शन उन्हीं से मिलता रहा।

तीन दिन के महोत्सव का आयोजन किया गया। पूज्याश्री ने अपने प्रवचनों में संघ के वरिष्ट, युवा महिलाओ और बालिकाओं को संघ के प्रति, मंदिर दादावाड़ी, के प्रति परमात्मा गुरुदेव के प्रति, हमारा आचरण कैसा रहना चाहिये इस बात पर विशेष जोर दिया और काफी सारे बदलांव की जरूरत दर्ज की।

स्वर्ण जयंती ध्वजारोहण का ऐतिहासिक चढ़ावे के साथ श्रीमती मोहनीदेवी आसकरणजी पारख परिवार लाभार्थी बना।

प्रवचन के दौरान धर्मशाला निर्माण के लिए चढ़ावे भी बोले गये जिसमें प्रथम चढावा जैन धर्म मे विशेष रूचि रखने वाला एवं पू. आचार्य श्री तथा पू. गुरुवर्याश्री के प्रति विशेष श्रद्धा रखने वाला अजैन परिवार श्रीमती पूनीदेवी सूरजमलजी जाट परिवार का नाम गुरुवर्याश्री ने जाहिर किया। पश्चात बोले गए चढ़ावो से खान्देश में इतिहास रच दिया गया। पू. गुरुवर्याश्री के निश्रा एवं सानिध्य की अभुतपूर्व अनुमोदना हुई। धर्मशाला के मुख्य प्रवेश द्वार के लाभार्थी श्रीमती बसंतीदेवी चैनसुखजी बोथरा परिवार, प्रथम हॉल के लाभार्थी श्रीमती रूपादेवी गुलाबचंदजी चोरडिया परिवार, द्वितीय हॉल के लाभार्थी श्रीमती गोगाबाई आईदानजी कोचर परिवार बने। प्रत्येक ध्वजा पर स्वामीवात्सल्य का आयोजन करने का निर्णय श्री गुरुवर्याश्री ने जाहिर किया। पू. गुरुवर्याश्री के वाणी से ऐसा भाव-भरा और अदभुत माहौल बना जो देखते ही बनता था। हर आँख खुशी से नम थी। प्रति दिन भक्ति संध्या में भी खूब आनंद आया। जिसमे बाल कलाकार नमन डागा (मलकापूर निवासी) तथा आकाश शाह (नवसारी निवासी) ने जोरदार रंग जमाया। महापूजन में विधिकार की जिम्मेदारी श्री नैषदभाई शाह (सूरत) ने अपनी टीम के साथ बेखूबी निभाई दि. 17/05/2017 के गुरुवर्याश्री के प्रवचन के दौरान सौ. गौरी विनय बोथरा ने अपने आंतरिक भाव व्यक्ति किये।

गुरुवर्या श्री के सानिध्य में ज्ञान-वाटिका की स्थापना हुई। इस प्रकार खापर नगर में एक अनूठे इतिहास की रचना हुई।

प्रेषक

ललितकुमार जगदीश जाट, खापर जि. नंदुरबार (महा.)

अहमदाबाद में पंन्यास पद समारोह सम्पन्न

प.पू. मोहनलालजी म. के समुदाय के पूज्य मुनिराज श्री जयानंदजी म. के शिष्य पूज्य मुनि श्री कुशल मुनिजी म. को अहमदाबाद खरतरगच्छ संघ के तत्त्वावधान में वैशाख सुदि 6 ता. 1 मई 2017 को गच्छाधिपति आचार्य भगवंत श्री विजय जयघोष सूरिजी म. आदि विशाल साधु साध्वियों की पावन निश्रा में पंन्यास पद अर्पण किया गया।

पूज्य मुनिश्री कुशल मुनिजी म. ने 18 महिनों तक निरन्तर तपस्या करके उत्तराध्ययन से लेकर भगवती सूत्र तक के योगोद्वहन किये। इतने कम समय में योगोद्वहन का यह अपने आप में कीर्तिमान बना।

पद अर्पण के पश्चात् पंन्यास श्री विनय कुशल मुनि गणि नाम अर्पण किया गया।

समारोह में पूरे भारत के लोग उपस्थित रहे।

अहमदाबाद में शिविर संपन्न

नवरंगपुरा दादासा नां पगला अहमदाबाद के तत्वावधान में अष्ट दिवसीय आवासीय जीवन जीने की कला कन्या संस्कार शिविर बहुत ही शानदान सम्पन्न हुआ। यह शिविर 14/5/2017 रविवार से 21/5/2017 रविवार तक रखा गया था। पिछले 6 सालों से प.पू. गच्छाधिपति आचार्य भगवंत श्री जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी म.सा. की आज्ञानुवर्तीनि प.पू. गच्छगणिनी सुलोचनाश्री जी म.सा. प.पू. सुलक्षणा श्री जी म.सा. की सुशिष्या डॉ. प्रियश्रद्धांजना श्री जी म.सा. प्रेरणा एवं निश्रा में अखिल भारतीय सदा कुशल सेवा समिति द्वारा आयोजित हो रहा है इस बार करीब 250 कन्याओं का शिविर रहा।

जिसमें प्रथम स्थान बाड़मेर निवसी कुमारी खुशबू सिंघवी, द्वितीय स्थान रक्षा मालू गुडामालानी और तृतीय, स्थान बालोतरा निवासी मोनिका सिंघवी ने प्राप्त किया।

भक्तामर क्लास तथा प्रतिक्रमण क्रियादि साध्वी प्रियमेघांजनाश्री प्रियवीरांजनाश्री जी करवाते थे

प्रवचन- प्रियस्नेहांजनाश्री एवं प्रियस्वर्णांजनाश्री जी ने दिया।

कैसा हो फ्रेन्ड सर्कल, कैसे पाऊँ जो मैं चाहूँ, बहना पवित्र रहना, सक्सस, के सीकृेट फेमस बनने के पोइन्ट आदि क्लासस डॉ. प्रियश्रद्धांजना श्री जी म.सा. ने ली थी।

इसके अलावा स्पीकर तथा अदर एक्टी वीटिस के लिए अमिता बेन अहमदाबाद, कल्पेश मुम्बई हेमांग अहमदाबाद, महावीरजी गुलेच्छा अहमदाबाद, मधुबेन भिंवडी तथा लविशा बागरेचा गदग आदि पधारे।

कुशल वाटिका में शनिवार को उमड़ा श्रद्धा का सैलाब

बाडमेर से 6 किलोमीटर दूर अहमदाबाद रोड पर स्थित कुशल वाटिका में विश्व का द्वितीय राजहंस मन्दिर में शनिवार को श्रद्वा का सैलाब उमड पडा। कुशल वाटिका ट्रस्ट के कोषाध्यक्ष बाबूलाल टी. बोथरा ने बताया कि बाडमेर शहर के समीप कुशल वाटिका प्रांगण में हर शनिवार को मेले का आयोजन होता है,जिसमें बाडमेर सहित आस–पास के अन्य गावो से जैन बन्धु पहुचते है। कुशल वाटिका में आने वाले भक्त को मुनिसुव्रत स्वामी भगवान मन्दिर, दादावाडी, नवग्रह मन्दिर, गुरू मन्दिर, देवी–देवताओ के आदि मन्दिरो के दर्शन, पूजा आदि का लाभ मिलता है। बोथरा ने बताया कि शनिवार को कुशल वाटिका में प्रातः 6 बजे से भक्तो का दर्शन व पूजा के लिए आना–जाना शुरू हो जाता है जो पुरे दिन मेले सा नजर आता है ओर हर शनिवार को हजारो भक्त दर्शन कर खुशहाली की कामना करतें है।

कोट्टूर में अधिवेशन सम्पन्न

ता. 30/5/17 मंगलवार को केयूप कोटूर शाखा द्वारा आयोजित कर्नाटक प्रांतीय अखिल भारतीय खरतरगच्छ युवा परिषद् की शाखाओं का अधिवेशन बड़े हर्ष उल्लास से सम्पन्न हुआ। मीटिंग में कई विषयों पर चर्चा करके निम्न प्रस्ताव पारित किये गये

1. कर्नाटक की जो शाखा सक्रिय नहीं है, वहां पर जाकर शाखा के पदाधिकारियों से सम्पर्क कर सक्रियता बनाना
2. कर्नाटक मे कई शहर ऐसे है जहां अपने काफी घर होते हुए भी शाखा नहीं बन पाई, ऐसे शहर/गाँव का चयन करके शाखा के लिए प्रेरित करके शाखा का गठन केन्द्रीय बोर्ड की सहमति से करवाना
3. गच्छाधिपति आचार्य भगवंत श्री जिन मणिप्रभसूरीश्वर जी म.सा. की निश्रा में बीकानेर में आयोजित स्वाध्याय शिविर मे जाने के लिए सभी शाखाओं के सदस्यों को प्रेरित करना
4. गच्छाधिपति एवं के यूप राष्ट्रीय कमिटी से विचार के यूप के उद्देश्य और हर शाखा में क्या गतिविधियां होनी चाहिए उसको दर्शाता हुआ एक (Booklit) पुस्तक प्रकाशित कर हर शाखा के सदस्य तक पहुँचाना
5. हर शाखा को सक्रिय बनाने के लिए एवं विहार–वैयावच्च व्यवस्था सुद्ध बनाने के लिए एक फंड की जरूरत होती है उसके लिए सेंट्रल कमिटी से फंड के विषय में चर्चा करना
6. कर्नाटक मे नई शाखाओं का गठन, गच्छ को मजबूती प्रदान करने के लिए एवम् सक्रीय बनाने के लिए एक कमिटी बनाई गई, इस कमिटी में कर्नाटक की हर शाखा के अध्यक्ष एवं सचिव सदस्य रहेंगे। इस कमिटी को हर महीने एक रविवार को चुनकर कोई शहर/गाँव जाकर सक्रियता बढ़ाने के लिए प्रेरित करना
7. प्रांतीय अधिवेशन मे हर शाखाओं से कम से कम 2 प्रतिनिधि प्रतिनिधित्व करना अनिवार्य रहेगा

निवेदक: श्री प्रकाश चोपड़ा कोटूर

गिरनार तीर्थ में समझौता

सुप्रसिद्ध जैन श्वे. गिरनार तीर्थ में जैन समाज व सनातन समाज के बीच सौहार्द्रपूर्ण वातावरण में समझौता हो गया है। पिछले काफी समय से जैन यात्रियों व साधु-संतों के साथ पांचवी टुंक जो वरदत्त-गणधर की है, को लेकर दुर्व्यहवार होता था।

समझौते के अनुसार जैन संत व श्रावक पांचवी टुंक के दर्शन कर सकेंगे।

यह ज्ञातव्य है कि टूंक में विराजमान वरदत्त गणधर की चरणपादुका को सनातन समाज ने दत्तात्रेय की टूंक बताकर कब्जा कर लिया था व जैनों को दर्शन, पूजा नहीं करने दी जाती थी।

सेठ देवचन्द लक्ष्मीचंद पेढ़ी की ओर से जारी प्रेस विज्ञप्ति के अनुसार उस टूंक में दोनों समाज दर्शन कर सकेंगे। इस सहमति पत्र पर जैन समाज की ओर से पू. आचार्य विजयप्रद्युम्नविमलसूरिजी म. व पू. आचार्य श्री हेमवल्लभसूरिजी म. ने हस्ताक्षर किये हैं।

दो आचार्यों का मिलन

श्रमण संघ के आचार्य ध्यानयोगी डॉ. श्री शिवमुनिजी म. एवं खरतरगच्छाधिपति आचार्य श्री जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी म. का मिलन विहार के दौरान हुआ। दोनों आचार्य भगवंतों के बीच ध्यान के संदर्भ में विचार विमर्श हुआ। समाज में बहुत ही प्रसन्नता का वातावरण बना।

श्री चन्द्रास्वामी का स्वर्गवास

जगदाचार्य पद से विभूषित श्री चन्द्रस्वामी का 69 वर्ष की उम्र में ता. 23/5/17 को स्वर्गवास हो गया।

उनका मूल नाम नेमीचंदजी जैन था। वे गांधी गोत्र के थे। बहरोड़ (जि. अलवर) के निवासी थे। बाद में परिवार हैदराबाद में बसा था।

उन्होंने जैन मुनियों के सानिध्य में रहकर साधना का रहस्य प्राप्त किया था। बाद में वे हिमालय की गुफाओं में भी रहे थे।

प्रधानमंत्री नरसिम्हाराव व चन्द्रशेखर के समय में उनका राजनैतिक वर्चस्व चरम पर था।

पूज्य आचार्य प्रवर श्री जिनमणिप्रभसूरिजी म.सा. के संपर्क में वे भाईजी श्री हरखचंदजी नाहटा के माध्यम से आये थे।

बाद में पूज्यश्री की निश्रा में कई कार्यक्रमों में उनकी उपस्थिति हुई थी।

इस अवसर पर पूज्य आचार्य श्री ने कहा- उन्होंने अपने प्रभाव से हजारों लोगों को शाकाहारी बनाकर अहिंसा का देश विदेश में प्रचार किया था। वे बहुत ही सरलमना थे।

जहाज मंदिर परिवार की ओर से हार्दिक श्रद्धांजली समर्पित है।

श्री मुम्बई नगरे

भव्यातिभव्य चातुर्मास प्रवेश समारोह

आज्ञाप्रदाता

पू. गच्छाधिपति आचार्य देव
श्री जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी म.सा.

आशीर्वाद
प.पू. प्रवर्त्तिनी श्री शशीप्रभाश्रीजी म.सा.,

चातुर्मास निश्रा

प.पू. प्रवर्त्तिनी श्री सज्जनश्रीजी म.सा.,
प्रवर्त्तिनी श्री शशिप्रभाश्रीजी म.सा. की सुशिष्याऐं

पू. श्री सम्यग्दर्शनाश्रीजी म.सा., पू. श्री कनकप्रभाश्रीजी म.सा.,
पू. श्री सम्यक्प्रभाश्रीजी म.सा., पू. श्री सत्वबोधिश्रीजी म.सा आदिठाणा

चातुर्मास स्थल
कपोल वाड़ी
2 री पांजरा पोल
मुम्बई - 4

प्रवेश शुभ मुहूर्त : आषाढ सुदि 2 रविवार, दिनांक 25 जून 2017, प्रात: 8.30 बजे

सकल श्रीसंघ को पधारने का हार्दिक अनुरोध करते हैं।

आज्ञाप्रदाता

पू. गच्छाधिपति आचार्य देव
श्री जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी म.सा.

श्री साँचोर नगर की धन्यधरा पर
भव्यातिभव्य
चातुर्मास प्रवेश समारोह

आशीर्वाद
प.पू. पार्श्वमणि तीर्थ प्रेरिका गच्छ गणिनी
सुलोचनाश्रीजी म.सा. सुलक्षणाश्रीजी म.सा.

चातुर्मास स्थल
कुशल भवन
सुनारों का वास
पो. सांचोर जि. जालोर

चातुर्मास निश्रा

प.पू. गणिनी सुलोचना श्रीजी म.सा. एवं सुलक्षणाश्रीजी म.सा. सुशिष्याऐं

पू. श्री प्रियसौम्यांजनाश्रीजी म.सा., पू. श्री प्रियज्ञानांजनाश्रीजी म.सा.
पू. श्री प्रियदर्शनांजनाश्रीजी म.सा., पू. श्री प्रिय वर्षांजनाश्रीजी म.सा.

प्रवेश शुभ मुहूर्त : आषाढ सुदि 9 रविवार, दिनांक 2 जुलाई 2017, प्रात: 8.30 बजे

सकल श्रीसंघ को पधारने का हार्दिक अनुरोध करते हैं।

निवेदक
श्री जैन श्वे. खरतरगच्छ संघ साँचोर-मुम्बई

प्रधान कार्यालय : कुशल भवन, सुनारों का बास, साँचोर जि. जालोर (राज.) टेलि : 02979-283154
मुम्बई कार्यालय : श्री शांतिनाथ जिनालय एवं दादावाड़ी, कुशल भवन, विल्सन स्ट्रीट, वी.पी. रोड़, पोलीस चौकी के नजदीक, मुम्बई - 4, टेलि. 022-56109405

पादरु नगर में दादावाड़ी की 29 वी वर्षगांठ व ध्वजारोहण सम्पन्न

पादरू कस्बे मे श्री शितलनाथ भगवान् व दादा जिनकुशलसूरी दादावाड़ी का 29 वॉ ध्वजारोहण समारोह का आयोजन हुआ।

ट्रस्ट के अध्यक्ष कैलाश संखलेचा ने बताया की भगवान श्री शितलनाथ स्वामी के लाभार्थी शाह वंशराजजी जुगराजजी संखलेचा व दादा गुरूदेव जिनकुशलसुरीजी के लाभार्थी शाह सावलचंद पृथ्वीराज जी संखलेचा गदग वाले के घर से गाजते बाजते व ढोल नगाड़े के साथ दादावाड़ीजी मे पधारे और विधि-विधान से भगवान व दादाजी की ध्वजा रोहण फहराने का लाभ प्राप्त हुआ।

इस समारोह मे उपस्थित ट्रस्टी पुखराजश्री श्रीमाल, वगतावरमल बाफना व दिलीप मरड़ीया, पृथ्वीराज संखलेचा गौतम संखलेचा, युवा कार्यकर्त्ता नागराज बाफना, मुलचद बाफना, रमेश जैन, सुमेरमल बालर आदि ने भगवान् व दादागुरु की आरती व मंगलदीप तथा दोपहर मे पुजा में भाग लिया।

अक्षय तृतीया पारणा सम्पन्न

पार्श्वमणि पार्श्वनाथ दादा के तीर्थ में (आदोनी) पार्श्वमणि तीर्थ प्रेरिका गुरुवर्या प.पू. सुलोचना श्रीजी म.सा. तपस्विरत्ना प.पू. सुलक्षणा श्रीजी म.सा. आदि ठाणा 13 की निश्रा में अक्षय तृतीया को वर्षीतप के पारणे का कार्यक्रम हुआ। हैद्राबाद, रेणिगुन्टा, रायचूर, बेंगलूर आदि स्थानों से वर्षीतप के तपस्वियों का आना हुआ। प्रात: काल सभी ने परमात्मा आदिनाथ एवं सभी भगवन्त की पूजा सेवा का सुन्दर लाभ लिया। 10.30 बजे वरघोडें का आयोजन रखा गया। जिसमें पार्श्वमणि पार्श्वनाथ प्रभु व दादा जिनदत्तसूरि म. की नूतन आंगी को भी वरघोड़े में घुमाया गया। सभी श्रद्धालु गण आंगी को मस्तक पर लेकर प्रसन्न हो रहे थे।

वरघोड़ा पद्मावती प्रवचन हॉल की तरफ पहुँचा हर्षान्वित तन-मन से तपस्वियों को बधाते हुए जयकारे के साथ सभी श्रद्धालु जनों का प्रवेश हुआ। गुरुवन्दन के पश्चात् मंगलाचरण हुआ। सर्वप्रथम प.पू. प्रियरंजनाश्रीजी म.सा. ने वर्षीतप की तपस्या पर विशेष प्रकाश डालते हुए सुपात्र दान आदि दान आहेभवपूर्वक होना चाहिए ऐसा उद्‌बोधन दिया। प.पू. प्रियकल्पना श्रीजी म.सा. ने तपस्या के अनुमोदनार्थ सुन्दर भजन की प्रस्तुति दी। तत्पश्चात् तीर्थ के ट्रस्टी श्रीमान् रमणजी ने श्रेयांसकुमार बनकर तपस्वियों को पहले पारणे कराने का चढ़ावा बोला। जिनका लाभ रेणुगुन्टा निवासी श्रीमान प्रकाशजी, सुरेशजी, किशोरजी कटारिया परिवार ने लिया तथा अगले वर्ष जयजिनेन्द्र का लाभ भी इसी परिवार ने लिया। कामली बोहराने का लाभ बेंगलूर निवासी शा. मोहनलालजी उम्मेदमलजी डागलेचा ने लिया। तत्पश्चात गुरुवर्याश्री ने अपनी सरल व स्पष्ट मधुरी वाणी से हृदयस्पर्शी प्रवचन फरवाया। अन्त में कामली वोहरायी गयी। वर्षीतप के तपस्वियों में प्रियरंजना श्रीजी म.सा. की संसारिक परिवार से भाभी, बहन, व भाणजी भी थे। इनमें सबसे छोटी 11 वर्ष की मुमुक्षु खुशी भंडारी थी। सभी ने उसकी खूब अनुमोदना की! एक बजे सभी तपस्वियों का पारणा इक्षुरस से किशोरजी कटारिया ने श्रेयांक्ष कुमार बनकर करवाया।

इस वर्ष का इक्षुरस व स्वामी वत्सल का लाभ रायपुर निवासी अरविनजी अनिलजी बांठिया ने लिया। अंत में आभार व्यक्त किया रमणजी पार्श्वमणि तीर्थ के ट्रस्टी ने किया।

चित्तौड– भीलवाड़ा में पूज्यश्री का प्रवास

पूज्य गुरुदेव गच्छाधिपति आचार्य भगवंत श्री जिनकान्तिसागरसूरीश्वरजी म.सा. आदि ठाणा 6 बीकानेर की ओर विहार करते हुए ता. 11 जून को चित्तौड़ नगर में पधारे श्री जैन श्वे. मू. पू. श्री संघ की ओर से पूज्य श्री का भव्य स्वागत किया गया। इस अवसर पर तपागच्छीय मुनि श्री जिनवल्लभविजयजी म. का भी पदार्पण हुआ। तलेटी मंदिर में हरिभ्रद्रसूरि स्मृति मंदिर में पूज्य श्री का प्रवचन हुआ। वहीं श्री संघ का स्वामिवात्सल्य रखा गया। इस अवसर पर बीकानेर, मन्दसौर, भीलवाड़ा, ब्यावर, नीमच, निम्बाहेडा आदि क्षेत्रों से श्रद्धालुओं का आगमन हुआ। उनका अभिनंदन किया गया।

यह ज्ञातव्य है कि तलेटी मंदिर पूज्य श्री की प्रेरणा से निर्मित हो रहा है। श्री संघ ने प्रतिष्ठा की विनंती की।

वहाँ से विहार कर पूज्यश्री 14 जून को भीलवाड़ा पधारे राज. सरकार की ओर से राज्यमंत्री श्री धन्नारामजी पुरोहित ने पूज्यश्री दर्शन कर स्वागत किया।

श्री ज्ञानचंदजी सुराणा परिवार की ओर से सकल संघ का नाश्ता रखा गया। वहीं से शोभायात्रा प्रारंभ होकर जिन मंदिर व प्रमुख बाजारों से होती हुई दादावाडी पहुँची, जहाँ प्रवचन सभा का आयोजन हुआ। पूज्य आचार्य श्री, पू. मनितप्रभसागरजी म. एवं पू. साध्वी गुणरंजना श्रीजी म. के प्रवचन हुए। स्वामिवात्सल्य का लाभ अ.भा. खरतरगच्छ युवा परिषद की भीलवाड़ा शाखा की ओर से लिया गया। दादावाडी के विस्तार व विकास हेतु पूज्यश्री के सानिध्य में योजना बनाई गई। इस अवसर पर जयपुर, ब्यावर, दिल्ली, नीमच, बिजयनगर, टोंक, बाड़मेर, अहमदाबाद, हैदराबाद, चित्तौड आदि स्थानों से बडी संख्या में गुरु भक्तों का आगमन हुआ।

प्रेषक

मुकेश प्रजापत

नीमच में भव्य समारोह

गुरुवर्या श्री प.पू. हेमप्रभा श्रीजी म.सा. विनितप्रभा श्रीजी म.सा. को सादर श्रद्धांजलि समर्पित

बैंगलोर। बसवनगुडी विमलनाथ मंदिर के आराधना भवन के प्रांगण में गुरूवार को प.पू. सुप्रसिद्ध व्याख्यात्री हेमप्रभा श्री जी म.सा. की सुशिष्यायें प.पू. प्रियंवदा श्रीजी म.सा., प.पू. शुद्धांजना श्रीजी म.सा. आदि ठाणा 6 की निश्रा में प.पू. गुरुवर्या श्री हेमप्रभा श्री जी म.सा., विनितप्रज्ञा श्रीजी म.सा. की 10 वीं पुण्यतिथि के अवसर पर गुणानुवाद सभा का आयोजन किया गया। गुणानुवाद सभा की शुरूआत प.पू. गुरुवर्या श्रीजी के मंगलाचरण के साथ हुआ। दीप प्रज्वलन एवं माल्यार्पण संघ के वरिष्ठ सदस्यों द्वारा किया गया। प.पू. गुरुवर्या श्रीजी ने गुणानुवाद सभा में फरमाया कि इस धरातल पर अस्तित्व सभी का होता है पर व्यक्तित्व विरलों का ही होता है। अस्तित्व सहज मिलता है, पर व्यक्तित्व निर्मित करना पड़ता है। ऐसी ही प.पू. गुरुवर्या श्री हेमप्रभा श्रीजी म.सा. व्यक्तित्व और कृतित्त्व की धनी थी। प.पू. विनितप्रज्ञा श्रीजी जिनका जीवन गुरु समर्पण एवं ज्ञान की गंगा से समर्पित था। सभा में जब द्वय गुरुवर्या श्रीजी के संस्मरणों का स्मरण किया गया तो सभी भक्तजनों की आंखों से आँसू छलक उठे। चैन्नई से पधारे गुरु भक्त डॉ. ज्ञान जैन ने कहा गुरुवर्या श्रीजी का जीवन दीप की तरह प्रकाशमान था। वह यही कहती थी कि अहम् बनना है तो अहं को त्याग दो। गुरुवर्या श्रीजी के प्रति सभी साध्वी मंडल ने भाव पुष्प समर्पित किए। सभा में उपस्थित संघ अध्यक्ष महेन्द्र जी रांका, वंदना जी चौपड़ा, तेजराजजी मालाणी, ललित जी डाकलिया, राजेशजी बागरेचा, संगीताजी पारख, आरती जी चंडालिया, तनसुखजी गुलेच्छा आदि द्वारा भाव व्यक्त किए गए। खरतरगच्छ महिला परिषद द्वारा दादा गुरुदेव की पूजा पढ़ाई गई और शाम को भक्ति भावना का कार्यक्रम आयोजित किया। संचालन अरविन्द जी कोठारी द्वारा किया गया।

ज्ञान वाटिका शिविर सम्पन्न

खरतरगच्छाधिपति आचार्य भगवन्त श्री मणिप्रभसुरीश्वर जी महाराज की प्रेरणा से प्रारम्भ श्री जिन कुशलसुरी जैन दादावाड़ी ट्रस्ट बसवनगुड़ी के अन्तर्गत विशेष अध्यापिकाओं द्वारा संचालित ज्ञान वाटिका ने अपने दूसरे सफलतम वर्ष में प्रवेश किया। इस अवसर पर आयोजित भव्य समारोह में प. पू. प्रियवंदा श्रीजी, शुद्धांजना श्रीजी आदि ठाणा ने अपनी पावनीय निश्रा प्रदान की इस अवसर पर साध्वी जी अपने विचार व्यक्त करते हुए कहा कि हमने भले ही मन्दिर में भगवान की प्रतिमा तो विराजमान कर दी, लेकिन हम स्वंय भगवान कैसे बनें यह संस्कार बच्चों में देने जरूरी है। ज्ञान वाटिका के संयोजक अरविन्द कोठारी ने बताया कि यहाँ पर बच्चों को धार्मिक शिक्षण के साथ साथ व्यावहारिक ज्ञान की शिक्षा डिजिटल तकनीक एवं प्रोजेक्टर के माध्यम द्वारा दी जा रही है, पिछले वर्ष की तुलना में इस वर्ष वाटिका में प्रवेश लेने वाले बच्चों में काफी वुद्धि हुई है। इस अवसर पर ट्रस्ट के मन्त्री कुशल राज गुलेच्छा उपाध्यक्ष तनसुखराज गुलेच्छा, लाभचन्द मेहता, रीटा पारख, युवा परिषद् अध्यक्ष ललित डाकलिया उपस्थि थे।

केयुप दुर्ग के अध्यक्ष दुर्ग संघ के महामंत्री बने

अखिल भारतीय खरतरगच्छ युवा परिषद् दुर्ग शाखा के अध्यक्ष संघवी पदम बरडिया श्री जैन श्वेताम्बर मूर्तिपूजक संघ एवं श्री आदिनाथ श्वेताम्बर मूर्ति ट्रस्ट के वर्ष 2017-20 के लिए महामंत्री चुने गए। खरतरगच्छाधिपति आचार्य श्री जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी म.सा. के आचार्य बनने के बाद प्रथम चातुर्मास दुर्ग नगर में पूजनीया माताजी म.श्री रतनमालाश्रीजी म. पू. बहिन म. डॉ. श्री विद्युत्प्रभाश्रीजी म. आदि साधु संतों के साथ संपन्न हुआ। तब सी.ए. श्री पदम बरडिया संघ शास्ता चातुर्मास समिति, दुर्ग के महामंत्री भी थे। आचार्य श्री के दुर्ग चातुर्मास के पश्चात् बरडिया परिवार की ओर से प.पू. आचार्य श्री की पावन निश्रा में छःरी पालित संघ का आयोजन भी किया गया। जहाज मंदिर परिवार की ओर से हार्दिक बधाई।

महिदपुर में केयुप का गठन

पूज्य गुरुदेव गच्छाधिपति आचार्य भगवंत श्री जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी म.सा. आदि ठाणा उज्जैन से विहार कर ता. 1 जून 2017 को महिदपूर सिटी पधारे। श्री संघ द्वारा पूज्यवरों का भव्य स्वागत किया गया। संघ अध्यक्ष सरदारमलजी चौपड़ा ने सभा का संचालन करते हुए कहा-हमारे गांव में खरतरगच्छ के इतिहास में गच्छाधिपति आचार्य भगवंत प्रथम बार पधारे हैं। यह हमारे श्रीसंघ का सौभाग्य है। दादावाड़ी से शोभायात्रा निकाली गई। पूज्यश्री का प्रवचन हुआ। दोपहर में युवाओं की मीटींग में गच्छ विकार, गच्छ संवर्धन आदि विषयों पर विचार विमर्श किया गया। श्री अखिल भारतीय खरतरगच्छ युवा परिषद् की शाखा का गठन सर्वसम्मिति से किया गया। आशीष चौपड़ा को अध्यक्ष एवं कपिल राखेचा को मंत्री चुना गया। साथ ही उपाध्यक्ष आदि पदाधिकारियों का चुनाव किया गया।

मन्दसौर में केयुप का गठन

मंदसौर प्रवेश पर उपस्थित श्रद्धालु

मालव प्रदेश के ऐतिहासिक नगर मन्दसौर में पूज्य गुरुदेव आचार्य भगवंत गच्छाधिपति श्री जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी म.सा. आदि ठाणा 6 का ता. 6 जून 2017 को भव्य प्रवेश संपन्न हुआ। शोभायात्रा प्रारंभ से पहले पूर्व मंत्री श्री नरेन्द्रजी नाहटा के घर पर उनकी ओर से सरल संघ का नाश्ता रखा गया। पूज्य आचार्य श्री एवं पू. मुनि मनितप्रभ सागरजी म.सा. प्रभावशाली प्रवचन हुआ। स्थानीय विधायक श्री जसपालजी सिसोदिया एवं सकल संघ के अध्यक्ष श्री सुरेन्द्रजी लोढ़ा, खरतरगच्छ संघ के अध्यक्ष श्री अनिलजी लोढ़ा ने पूज्य श्री का अभिनंदन किया। दोपहर में युवाओं की बैठक में पूज्य श्री ने गच्छ की एकता के संदर्भ में संगठित होने की प्रेरणा दी। अखिल भारतीय खरतरगच्छ युवा परिषद् के उद्देश्य ज्ञात कर केयुप की मन्दसौर शाखा का गठन किया गया। अंशुल जैन को सर्व समिति से अध्यक्ष चुना गया। नरेश चौरडिया व शिखर धारीवाल को उपाध्यक्ष, जितेन्द्र लोढ़ा मंत्री, अश्विन बोथरा व दीपक लोढ़ा को सहमंत्री, हर्षित जैन कोषाध्यक्ष, अंकित जैन (चिनु) को सहकोषाध्यक्ष व नितिन सकलेचा को प्रचार मंत्री चुना गया।

बीकानेर में केयुप का गठन

पूजनीया प्रवर्त्तिनी महोदया श्री शशिप्रभा श्रीजी म.सा. की पावन निश्रा में बीकानेर में प्रतिष्ठा, नवाणुं भाव यात्रा आदि का भव्य आयोजन हुआ। उनकी पावन निश्रा में उनकी प्रेरणा से अखिल भारतीय खरतरगच्छ युवा परिषद् का गठन किया गया। राजीव खजांची को अध्यक्ष सर्वसम्मति से चुना गया। विकास कुमार नाहटा व पुनेश मुसरफ को उपाध्यक्ष, मनीष नाहटा मंत्री, प्रमोद गुगलिया कोषाध्यक्ष, अनिल सुराणा व प्रभात नाहटा सहमंत्री, विपुल कोठारी को संगठन मंत्री चुना गया। युवा परिषद् के अध्यक्ष, मंत्री आदि सदस्यों ने ता. 4 जून को कूंडला गांव में पूज्य आचार्य श्री के दर्शन कर आशीर्वाद प्राप्त किया।

जटाशंकर

आचार्य जिनमणिप्रभसूरि

जटाशंकर चौथी कक्षा का विद्यार्थी था। छोटी उम्र होने पर भी चतुर था। स्कूल में पढ रहा था। अध्यापक कक्षा में गणित का विषय पढ़ा रहे थे।

अध्यापक जोड़ बाकी गुणा भाग पढा रहे थे। बाकी कैसे करना, इसे अध्यापक महोदय मनोविज्ञान से अभ्यास करा रहे थे। बार बार समझाने पर भी जटाशंकर की समझ में कुछ भी नहीं आ रहा था। वह बार बार पूछ रहा था– यह बाकी क्या होती है!

अध्यापक ने कहा– जितने होते हैं, उसमें से जो कम हो जाते हैं, तब जो शेष रहते हैं, वह बाकी का परिणाम है।

जटाशंकर ने कहा– मुझे समझ में नहीं आया।

– चलो उदाहरण से समझो। मानो कि तुम्हारे पास 10 लड्डु हैं।

– मेरे पास तो नहीं है।

– अरे भाई, मुझे भी पता है कि नहीं है। पर मान लो।

जटाशंकर ने बीच में कहा– जब है नहीं तो मानूं कैसे और क्यों!

– अरे, यह गणित का विषय है, इसमें मानना होता है।

– नहीं होने पर भी मानना होता है!

– हाँ, मैंने कहा– मान लो तो मान लो। हाँ तो, माना कि तुम्हारे पास 10 लड्डु हैं। उसमें से दो तुमने खा लिये तो पीछे कितने बचे!

जटाशंकर बोला– 20 बचे।

मास्टर भन्ना गया। उसने कहा– दस में से दो जायेंगे तो शेष बीस कैसे बचे!

जटाशंकर धीरज के साथ बोला– मान लो! बीस बच गये। जब मानना ही है तो कम क्यों मानना! अध्यापक ने अपना सिर पकड लिया।

जीवन का गणित बिल्कुल अलग है। इसमें मानना नहीं होता। इसमें तो होता है। इसमें सब कुछ यथार्थ है। कल्पनाऐं भी यथार्थ है। क्योंकि हर कल्पना भी राग द्वेष से युक्त है तो उसका परिणाम भी कर्म बन्धन के रूप में मिलता ही है। जीवन के इस सत्य को समझे और बदलने का पुरूषार्थ करें।

गुरुवर्या फलोदी आई है आनंद की गुंजी शहनाई है

वीरो–रणवीरों की रंगभूमि मरूस्थली की प्रसिद्ध बहुरत्ना वसुन्धरा

फलोदी नगर में साध्वी श्रेष्ठा

प्रवर्तिनीवर्या प.पू. शशिप्रभाश्रीजी म.सा. का अपनी जन्म भूमि में

कृपा बरसी मेरे प्रभुवर की आई टोली सज्जन गुरुवर की

(आत्माल्हादकारी पावन–प्रवास–प्रवेश)

आत्मानंदकारी अमृत–आज्ञा प.पू. गच्छाधिपति मरूधर मणि श्री मणिप्रभसूरीश्वर जी म.सा

आत्मश्रेयस्करी अमृत कृपा प.पू. प्रवर्तिनी आगम ज्योति सज्जन श्रीजी म.सा.

सकल जिनशासन प्रेमियों को स्नेह सभर हृदयामंत्रणम् !

पधारो म्हारे देश...

आगमन होगा गुणिवर का, आगमन् होगा वीर वचनम् का...

आत्मांदोलनकारी अमृत सन्निधि

स्व. प्रवर्तिनी महोदया आगम ज्योति श्री सज्जनश्रीजी म.सा.

प.पू. प्रव. आशुकवयित्री सज्जन श्रीजी म.सा. की पट्टशिष्या

तप–जप– संयम साम्राज्ञी

प. पू. प्र. संघरत्ना शशिप्रभा श्रीजी म.सा.

आदि ठाणा 8

प्रवर्तिनी श्री शशिप्रभा श्रीजी म.सा.

प्रवेश शुभ मुहूर्त :

26 जून 2017 आषाढ़ सुदी 3, सोमवार

चातुर्मास प्रवेश की मंगल वेला में आप सहृदय पधार कर संघ को लाभान्वित कर आनंद के इस अनुपम अवसर पर हमारे सहस्नेही बन जिनशासन का गौरव बढ़ाएँ

विनीत

श्री जैन खरतरगच्छ संघ फलोदी
श्री जिनदत्तसूरि चातुर्मास कमेटी फलोदी 2017

संपर्क सूत्र

जवरीलाल बच्छावत
अध्यक्ष
94144 17668

यशवर्धन गोलेच्छा
सचिव
94144 17805, 80036 02511

।। श्री अवंति पार्श्वनाथाय नमः ।।

श्री उज्जैन नगरे

भव्य चातुर्मास प्रवेश समारोह

सकल श्री संघ को सादर आमंत्रण

आज्ञाप्रदाता

पू. गच्छाधिपति आचार्य
देव श्री जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी
म.सा.

दिव्य दृष्टि

पू. प्रवर्तिनी आगमज्योति
श्री प्रमोदश्रीजी
म.सा.

चातुर्मासार्थ
पावन निश्रा

पूजनीया माताजी म.
श्री रतनमालाश्रीजी म.सा.

आज्ञाप्रदाता

पूजनीया बहिन म.
डॉ. श्री विद्युत्प्रभाश्रीजी म.सा.

प्रवेश शुभ मुहूर्त :
आषाढ सुदि 9 रविवार, दिनांक 2 जुलाई 2017,
प्रातः 8.00 बजे

चातुर्मासार्थ शुभकांरी पावन निश्रा

पूजनीया माताजी म.
श्री रतनमालाश्रीजी म.सा.
पूजनीया बहिन म.
डॉ. श्री विद्युत्प्रभाश्रीजी म.सा. आदि ठाणा

सकल श्रीसंघ को पधारने का
हार्दिक अनुरोध करते हैं।

निवेदक

श्री अवन्ति पार्श्वनाथ तीर्थ
जैन श्वे. मारवाड़ी मूर्तिपूजक समाज ट्रस्ट

श्री अवंति पार्श्वनाथ चौक,
दानी गेट, पो. उज्जैन-456006 (मध्यप्रदेश)
फोन : (0734) 2555553/2585854

सम्पर्क सूत्र :
अध्यक्ष : हीराचन्द छाजेड़, उपाध्यक्ष : निर्मल कुमार संकलेचा,
सचिव : चन्द्रशेखर डागा, कोषाध्यक्ष : ललित कुमार बाफना
ट्रस्टी : रमेशचन्द बाठिया, विजयचन्द कोठारी, महेन्द्र गादिया,
नरेन्द्र कुमार धाकड, रजत मेहता

RNI : RAJHIN/2004/12270
Postal registration No. RJ/SRO/9625/2015-2017 Date of Posting 7th

।। श्री वर्धमान स्वामिने नमः ।।
।। अनंत लब्धिनिधान गुरु गौतम स्वामिने नमः ।।
।। दादागुरुदेव श्री जिनदत्त-मणिधारी जिनचन्द्र- जिनकुशल-जिनचन्द्रसूरिभ्यो नमः ।।

भारत वर्ष की राजधानी दिल्ली के हृदय चाँदनी चौक की एतिहासिक धरा पर

दिव्याशीष
पु. गुरुदेव श्री जिनकांतिसागर
सूरीश्वरजी म.सा.

प.पू. खरतरगच्छाधिपति आचार्य
श्री जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी म.सा.

वर्तमान गच्छाधिपति, मरुधर मणि, कोमल हृदय के स्वामी,
खरतरगच्छ के सरताज आचार्य भगवंत परम श्रद्धेय
पू. गुरुदेव श्री जिन मणिप्रभसूरीश्वरजी म.सा.
के आज्ञानुवर्ती अत्यंत सरल स्वभावी शीतलमना
मुनिराज प. पू. श्री मुक्तिप्रभसागरजी म.सा. व प्रखर
प्रवचनदाता मुनिराज प.पू. श्री मनीषप्रभसागरजी म.सा.

मुनिराज प.पू.
श्री मुक्तिप्रभसागरजी म.सा.

का भव्य चातुर्मासिक मंगल प्रवेश

दिनांक 2 जुलाई 2017, रविवार

आराधना, साधना, उपासना स्वरुप चातुर्मास के मंगल प्रवेश प्रसंग पर आप अपने परिवार व इष्ट मित्रों सहित पधारकर जिनशासन की शोभा में अभिवृद्धि करें।

प्रवचनदाता, मुनिराज प.पू.
श्री मनीषप्रभसागरजी म.सा.

चातुर्मास आराधना स्थल

श्री जैन खरतरगच्छ भवन
1945, कच्चा कटरा,
कटरा खुशाल राय,
किनारी बाजार, दिल्ली-006

निवेदक

श्री जैन खरतरगच्छ समाज (पंजी.)
राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र
दिल्ली

श्री जिनकान्तिसागरसूरि स्मारक ट्रस्ट,
जहाज मन्दिर, माण्डवला - 343042, जिला - जालोर (राजस्थान)
फोन : 02973-256107 / 256192 फैक्स : 02973-256040, 09649640451
e-mail : jahaj_mandir@yahoo.co.in
www. jahajmandir.com

श्री जिनकांतिसागर सूरि स्मारक ट्रस्ट, माण्डवला के लिए मुद्रक एवं प्रकाशक डॉ. यू. सी. जैन द्वारा महालक्ष्मी कम्प्यूटर सर्विस पुरा मोहल्ला, खिरणी रोड, जालोर से मुद्रित एवं जहाज मन्दिर, मांडवला, जि. जालोर (राज.) से प्रकाशित।
सम्पादक - डॉ. यू. सी. जैन
www.jahajmandir.org
शब्दांकन : धर्मेन्द्र बोहरा, जोधपुर-98290 22408